कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार

कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार

कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार

कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार

कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार कार

काक काक काक काक काक काक काक काक काक

काक काक काक काक काक काक काक काक काक

काक काक काक काक काक काक काक काक काक

काक काक काक काक काक काक काक काक काक

काक काक काक काक काक काक काक काक काक

सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार

सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार

सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार

सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार

सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार सार

सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह

सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह

सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह

सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह

सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह सिंह

हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार

हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार

हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार

हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार

हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार हार

राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय

राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय

राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय

राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय

राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय राय

रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक

रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक

रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक

रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक

रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक रंक

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे

हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे

हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे

हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे

हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे हारे

सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक

सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक

सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक

सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक

सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक सेक

कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही

कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही

कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही

कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही

कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही कही

सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा

सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा

सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा

सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा

सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा सहारा

रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही

रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही

रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही

रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही

रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही रही

सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर

सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर

सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर

सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर

सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर सीर

राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह

राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह

राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह

राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह

राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह राह

रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास

रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास

रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास

रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास

रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास रास

किस किस किस किस किस किस किस किस किस

किस किस किस किस किस किस किस किस किस

किस किस किस किस किस किस किस किस किस

किस किस किस किस किस किस किस किस किस

किस किस किस किस किस किस किस किस किस

सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर

सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर

सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर

सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर

सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर सिर

सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही

सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही

सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही

सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही

सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही सही

सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर

सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर

सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर

सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर

सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर सिहर

हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस

हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस

हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस

हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस

हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस हंस

रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस

रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस

रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस

रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस

रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस रहस

सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस

सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस

सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस

सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस

सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस सरस

हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर

हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर

हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर

हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर

हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर हेर

कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर

कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर

कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर

कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर

कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर कंकर

किया किया किया किया किया किया किया किया किया

किया किया किया किया किया किया किया किया किया

किया किया किया किया किया किया किया किया किया

किया किया किया किया किया किया किया किया किया

किया किया किया किया किया किया किया किया किया

सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा

सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा

सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा

सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा

सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा सिरा

रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा

रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा

रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा

रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा

रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा रिहा

सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी

सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी

सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी

सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी

सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी सारी

राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही

राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही

राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही

राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही

राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही राही

हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक

हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक

हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक

हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक

हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक हिंसक

सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय

सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय

सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय

सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय

सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय सराय

के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी

के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी

के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी

के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी

के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी के.के.सी

केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर

केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर

केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर

केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर

केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर केसर

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी किसी

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

किराया किराया किराया किराया किराया किराया किराया

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा कोरा

सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार

सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार

सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार

सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार

सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार सरकार

हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें। हिंसा की राह से सरकार को हरि सही करें।

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल जल

तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल

तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल

तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल

तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल

तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल तल

वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन

वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन

वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन

वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन

वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन वन

जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय

जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय

जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय

जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय

जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय जय

मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत

मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत

मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत

मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत

मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत मत

तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज

तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज

तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज

तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज

तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज तज

तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन

तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन

तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन

तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन

तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन तन

मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन

मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन

मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन

मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन

मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन मन

पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल

पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल

पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल

पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल

पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल पल

नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल

नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल

नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल

नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल

नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल नल

कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल

कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल

कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल

कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल

कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल कल

लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय

लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय

लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय

लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय

लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय लय

सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच

सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच

सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच

सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच

सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच सच

मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून

मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून

मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून

मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून

मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून मून

चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन

चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन

चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन

चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन

चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन

चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन चुन

तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक

तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक

तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक

तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक

तिलक तिलक तिलक तिलक तिलक तिकल तिकल

माया माया माया माया माया माया माया माया माया

माया माया माया माया माया माया माया माया माया

माया माया माया माया माया माया माया माया माया

माया माया माया माया माया माया माया माया माया

माया माया माया माया माया माया माया माया माया

सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर

सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर

सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर

सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर

सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर सुर

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना

सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना

सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना

सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना

सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना सुनना

करम करम करम करम करम करम करम करम करम

करम करम करम करम करम करम करम करम करम

करम करम करम करम करम करम करम करम करम

करम करम करम करम करम करम करम करम करम

करम करम करम करम करम करम करम करम करम

मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर

मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर

मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर

मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर

मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर मकर

सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल

सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल

सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल

सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल

सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल सरल

पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक

पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक

पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक

पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक

पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक पलक

सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल

सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल

सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल

सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल

सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल सकल

चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन

चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन

चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन

चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन

चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन चयन

पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस

पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस

पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस

पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस

पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस पावस

कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत

कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत

कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत

कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत

कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत कूकत

हरित हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत

हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत

हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत

हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत

हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत हिरत

नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली

नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली

नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली

नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली

नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली नीली

पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली

पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली

पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली

पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली

पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली पाली

पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी

पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी

पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी

पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी

पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी पानी

रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी

रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी

रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी

रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी

रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी रानी

चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना

चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना

चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना

चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना

चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना चुनना

वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता

वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता

वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता

वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता

वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता वीरता

मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत

मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत

मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत

मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत

मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत मूरत

सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज

सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज

सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज

सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज

सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज सूरज

तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको

तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको

तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको

तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको

तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको तुमको

जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून

जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून

जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून

जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून

जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून जून

पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस

पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस

पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस

पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस

पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस पारस

लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर

लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर

लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर

लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर

लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर लकीर

जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन

जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन

जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन

जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन

जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन जीवन

जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला

जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला

जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला

जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला

जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला जुमला

विमला विमला विमला विमला विमला विमला विमला

विमला विमला विमला विमला विमला विमला विमला

विमला विमला विमला विमला विमला विमला विमला

विमला विमला विमला विमला विमला विमला विमला

विमला विमला विमला विमला विमला विमला विमला

पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी

पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी

पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी

पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी

पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी पारसी

मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम

मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम

मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम

मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम

मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम मुलायम

लालची लालची लालची लालची लालची लालची लालची

लालची लालची लालची लालची लालची लालची लालची

लालची लालची लालची लालची लालची लालची लालची

लालची लालची लालची लालची लालची लालची लालची

लालची लालची लालची लालची लालची लालची लालची

समाज समाज समाज समाज समाज समाज समाज

समाज समाज समाज समाज समाज समाज समाज

समाज समाज समाज समाज समाज समाज समाज

समाज समाज समाज समाज समाज समाज समाज

समाज समाज समाज समाज समाज समाज समाज

लायक लायक लायक लायक लायक लायक लायक

लायक लायक लायक लायक लायक लायक लायक

लायक लायक लायक लायक लायक लायक लायक

लायक लायक लायक लायक लायक लायक लायक

लायक लायक लायक लायक लायक लायक लायक

नायक नायक नायक नायक नायक नायक नायक

नायक नायक नायक नायक नायक नायक नायक

नायक नायक नायक नायक नायक नायक नायक

नायक नायक नायक नायक नायक नायक नायक

नायक नायक नायक नायक नायक नायक नायक

कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल

कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल

कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल

कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल

कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल कलकल

पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल

पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल

पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल

पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल

पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल पलपल

परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार

परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार

परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार

परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार

परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार परिवार

गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद

गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद

गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद

गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद

गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद गद

वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद

वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद

वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद

वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद

वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद वेद

दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग

दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग

दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग

दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग

दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग दग

दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब

दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब

दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब

दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब

दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब दब

उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब

उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब

उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब

उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब

उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब उब

एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग

एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग

एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग

एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग

एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग एग

एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं

एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं

एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं

एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं

एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं एवं

दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग

दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग

दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग

दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग

दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग दंग

अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद

अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद

अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद

अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद

अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद अद

पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक

पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक

पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक

पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक

पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक पक

उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन

उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन

उन उन उन उऩ उन उऩ उन उन उन उऩ उन उऩ उन

उन उऩ उऩ उऩ उऩ उऩ उऩ उऩ उऩ उन उन उन उऩ

उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन उन

इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन

इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन

इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन

इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन

इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन इन

बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच

बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच

बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच

बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच

बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच बच

बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल

बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल

बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल

बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल

बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल बल

दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन

दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन

दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन

दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन

दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन दन

लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद

लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद

लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद

लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद

लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद लद

तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब

तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब

तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब

तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब

तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब तब

दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल

दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल

दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल

दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल

दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल दिल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल कुल

मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल

मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल

मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल

मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल

मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल

बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि

बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि

बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि

बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि

बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि बलि

रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल

रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल

रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल

रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल

रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल रेल

नील नील नील नील नील नील नील नील नील नील

नील नील नील नील नील नील नील नील नील नील

नील नील नील नील नील नील नील नील नील नील

नील नील नील नील नील नील नील नील नील नील

नील नील नील नील नील नील नील नील नील नील

ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला

ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला

ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला

ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला

ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला ओला

लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ

लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ

लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ

लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ

लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ

पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ

पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ

पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ

पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ

पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ पाइ

बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल

बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल

बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल

बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल

बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल बाल

आन आन आन आन आन आन आन आन आन आन

आन आन आन आन आन आन आन आन आन आन

आन आन आन आऩ आऩ आऩ आन आऩ आऩ आन

आन आन आन आऩ आऩ आऩ आन आऩ आऩ आऩ

आन आऩ आन आन आन आऩ आऩ आऩ आन आन

बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान

बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान

बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान

बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान

बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान बान

ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग

ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग

ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग

ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग

ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग ग्रेग

प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न

प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न

प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न

प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न

प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न प्रश्न

प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार

प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार

प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार

प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार

प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार

ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण

ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण

ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण

ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण

ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण ग्रहण

क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक

क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक

क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक

क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक

क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक क्राक

बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री

बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री

बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री

बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री

बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री बिक्री

मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र

मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र

मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र

मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र

मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र मिस्र

ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक

ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक

ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक

ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक

ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक ऐनक

बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन

बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन

बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन

बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन

बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन बेसन

गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर

गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर

गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर

गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर

गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर गूजर

गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर

गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर

गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर

गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर

गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर गूलर

बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली

बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली

बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली

बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली

बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली बिजली

अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली

अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली

अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली

अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली

अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली अकेली

बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना

बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना

बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना

बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना

बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना बिनना

बेबस बेबल बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस

बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस

बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस

बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस

बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस बेबस

उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन

उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन

उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन

उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन

उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन उपवन

उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना

उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना

उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना

उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना

उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना उलचना

गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली

गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली

गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली

गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली

गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली गीली

गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना

गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना

गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना

गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना

गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना गिरना

बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार

बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार

बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार

बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार

बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार बीमार

गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन

गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन

गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन

गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन

गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन गबन

जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन

जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन

जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन

जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन

जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन जामुन

तितली तितली तितली तितली तितली तितली तितली

तितली तितली तितली तितली तितली तितली तितली

तितली तितली तितली तितली तितली तितली तितली

तितली तितली तितली तितली तितली तितली तितली

तितली तितली तितली तितली तितली तितली तितली

लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर

लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर

लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर

लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर

लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर लेजर

वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर

वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर

वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर

वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर

वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर वीलर

हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया

हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया

हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया

हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया

हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया हासिया

पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया

पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया

पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया

पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया

पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया पलिया

शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम

शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम

शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम

शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम

शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम शलजम

इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए

इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए

इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए

इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए

इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए

मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल

मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल

मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल

मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल

मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल मलमल

कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत

कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत

कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत

कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत

कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत कसरत

आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका

आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका

आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका

आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका

आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका आजीविका

अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर

अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर

अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर

अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर

अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर अग्रसर

एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान

एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान

एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान

एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान

एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान एहसान

बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस

बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस

बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस

बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस

बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस बनारस

सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य

सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य

सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य

सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य

सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य सभ्य

हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा

हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा

हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा

हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा

हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा हिस्सा

सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का

सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का

सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का

सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का

सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का सिक्का

क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या

क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या

क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या

क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या

क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या

हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य

हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य

हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य

हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य

हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य हास्य

विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत

विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत

विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत

विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत

विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत विद्युत

रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता

रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता

रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता

रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता

रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता रास्ता

मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती

मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती

मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती

मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती

मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती मस्ती

बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता

बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता

बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता

बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता

बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता बस्ता

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी

तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य

तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य

तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य

तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य

तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य तथ्य

श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण

श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण

श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण

श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण

श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण श्रवण

भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर

भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर

भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर

भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर

भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर भीतर

भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत

भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत

भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत

भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत

भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत भारत

थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल

थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल

थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल

थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल

थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल थाल

शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर

शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर

शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर

शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर

शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर शोर

खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल

खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल

खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल

खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल

खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल खाल

शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा

शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा

शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा

शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा

शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा शीरा

धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा

धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा

धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा

धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा

धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा धीमा

शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य

शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य

शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य

शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य

शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य शिष्य

विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान

विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान

विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान

विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान

विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान विद्मान

कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा

कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा

कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा

कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा

कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा कैसा

विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या

विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या

विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या

विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या

विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या

बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना

बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना

बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना

बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना

बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना बौना

विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय

विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय

विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय

विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय

विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय विद्यालय

चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा

चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा

चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा

चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा

चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा चौराहा

पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा

पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा

पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा

पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा

पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा पौधा

अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था

अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था

अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था

अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था

अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था अवस्था

रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया

रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया

रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया

रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया

रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया रुपया

मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल

मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल

मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल

मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल

मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल मरुस्थल

मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना

मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना

मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना

मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना

मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना मस्ताना

रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस

रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस

रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस

रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस

रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस रुस

रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना

रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना

रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना

रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना

रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना रूना

मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि

मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि

मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि

मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि

मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि मरुभूमि

पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथवी पृथ्वी

पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी

पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी

पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथवी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी

पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी पृथ्वी

प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज

प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज

प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज

प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज

प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज प्याज

ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर

ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर

ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर

ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर

ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर ज्वर

कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प

कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प

कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प

कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प

कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प कल्प

सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त

सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त

सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त

सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त

सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त सन्त

भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य

भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य

भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य

भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य

भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य भव्य

कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा

कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा

कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा

कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा

कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा कच्चा

राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य

राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य

राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य

राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य

राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य राज्य

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ

सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन

सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन

सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन

सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन

सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन सम्मन

लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच

चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच

चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच

चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच

चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच चम्मच

उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च

उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च

उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च

उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च

उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च उच्च

फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल

फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल

फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल

फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल

फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल फल

हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द

हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द

हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द

हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द

हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द हिन्द

पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प

पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प

पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प

पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प

पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प पम्प

गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव

गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव

गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव

गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव

गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव गाँव

लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ

लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ

लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ

लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखऩऊ लखनऊ

लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ लखनऊ

रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न

रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न

रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न

रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न

रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न रत्न

ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन

ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन

ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन

ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन

ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन ऊन

ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख

ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख

ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख

ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख

ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख ऊख

आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला

आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला

आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला

आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला

आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला आंवला

ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली

ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली

ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली

ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली

ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली ऊखली

सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे

सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे

सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे

सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे

सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे सच्चे

आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल

आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल

आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल

आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल

आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल आँचल

वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ

वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ

वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ

वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ

वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ वहाँ

यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ

यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ

यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ

यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ

यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ यहाँ

कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ

कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ

कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ

कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ

कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ कराएँ

मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द

मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द

मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द

मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द

मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द

म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान

म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान

म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान

म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान

म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान म्यान

त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग

त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग

त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग

त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग

त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग त्याग

बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा

बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा

बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा

बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा

बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा

त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित

त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित

त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित

त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित

त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित त्वरित

मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य

मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य

मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य

मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य

मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य मूल्य

स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न

स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न

स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न

स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न

स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्वप्न स्नप्न स्नप्न

नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा

नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा

नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा

नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा

नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा नन्हा

आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख

आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख

आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख

आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख

आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख आँख

दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत

दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत

दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत

दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत

दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत दाँत

मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह

मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह

मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह

मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह

मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह मुँह

ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा

ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा

ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा

ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा

ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा ऊँचा

घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर

घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर

घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर घऱ घर

घर घर घर घर घर घर घऱ घऱ घर घर घर घर घऱ घऱ

घर घर घऱ घर घऱ घर घर घर घर घर घर घर घर घर

गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा

गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा

गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा

गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा

गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा गंगा

बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू

बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू

बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू

बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू

बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू बब्बू

झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग

झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग

झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग

झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग

झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग झाग

नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद

नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद

नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद

नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद

नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद नकछेद

ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला

ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला

ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला

ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला

ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला ग्वाला

छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ

छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ

छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ

छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ

छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ छाछ

खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड

खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड

खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड

खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड

खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड खण्ड

इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर

इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर

इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर

इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर

इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर इन्टर

डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू

डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू

डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू

डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू

डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू डाकू

डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया

डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया

डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया

डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया

डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया डाकिया

डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक

डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक

डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक

डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक

डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक डाक

टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब

टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब

टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब

टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब

टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब टब

पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व

पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व

पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व

पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व

पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व

सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य

सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य

सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य

सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य

सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य सूर्य

दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड

दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड

दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड

दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड

दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड दण्ड

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति

मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति मूर्ति

धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त

धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त

धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त

धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धर्त

धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त धूर्त

तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ

तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ

तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ

तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ

तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ तीर्थ

कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति

कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति

कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति

कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति

कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति कीर्ति

टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट

टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट

टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट

टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट

टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट टाट

छानना छानना छानना छानना छानना छानना छानना

छानना छानना छानना छानना छानना छानना छानना

छानना छानना छानना छानना छानना छानना छानना

छानना छानना छानना छानना छानना छानना छानना

छानना छानना छानना छानना छानना छानना छानना

ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली

ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली

ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली

ठिठोली ठिठोली टिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली

ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली ठिठोली

टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम

टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम

टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम

टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम

टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम टमटम

इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया

इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया

इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया

इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया

इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया इण्डिया

सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प

सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प

सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प

सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प

सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प सर्प

बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना

बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना

बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना

बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौनी बिछौना

बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना बिछौना

झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ

झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ

झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ

झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ

झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ झूठ

धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई

धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई

धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई

धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई

धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई धुलाई

दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प

दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प

दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प

दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प

दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प दर्प

ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला

ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला

ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला

ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला

ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला ठेला

घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना

घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना

घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना

घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना

घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना घूमना

घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा

घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा

घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा

घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा

घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा घूसा

स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन

स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन

स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन

स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन

स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन स्टेशन

ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन

ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन

ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन

ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन

ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन ढक्कन

पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई

पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई

पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई

पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई

पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई पिलाई

लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी

लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी

लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी

लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी

लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी लाठी

ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड

ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड

ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड

ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड

ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड ठन्ड

मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई

मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई

मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई

मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई

मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई मिठाई

कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यास कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि श्यसा कहि

श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा श्यसारा

मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन मतजल ख्चवपन

गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद गबअइ ध्णएउद

1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765 1234 098765

कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा

कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा

कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा

कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा

कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा कृपा

बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज

बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज

बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज

बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज

बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज बृज

हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय

हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय

हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय

हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय

हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय हृदय

कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल

कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल

कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल

कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल

कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल कृपाल

बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल

बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल

बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल

बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल

बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल बृजलाल

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत मृत

1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240

1240 1240 1240 1230 1240 1240 1240 1240

1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240

1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240

1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240 1240

5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825

5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825

5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825

5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825

5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825 5825

9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125

9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125

9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125

9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125

9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125 9125

नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप

सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश

सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश

सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश

सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश

सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश सदृश

प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति

प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति

प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति

प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति

प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति प्रकृति

ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्बटठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्बटठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडच ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ घ्झढडछ ग्ब्टठ

राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र

राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र

राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र

राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र

राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र

बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार

बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार

बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार

बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार

बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार बार-बार

युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध

युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध

युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध

युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध

युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध युद्ध

क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध

क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध

क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध

क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध

क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध क्रुद्ध

योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा

योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा

योद्धा योद्धा योद्धो योद्धो योद्धो योद्धो योद्धा

योद्धो योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा

योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा योद्धा

त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी

त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी

त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी

त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी

त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी त्रिपाठी

त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता

त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता

त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता

त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता

त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता त्रेता

त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त

त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त

त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त

त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त

त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त त्रस्त

ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि

ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि

ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि

ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि

ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि ऋषि

ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु

ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु

ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु

ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु

ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु ऋतु

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः

स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः

स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः

स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः

“क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क”

“क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क”

“क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क”

“क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क”

“क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क” “क”

44+10=54 44+10=54 44+10=54 44+10=54

44+10=54 44+10=54 44+10=54 44+10=54

44+10=54 44+10=54 44+10=54 44+10=54

44+10=54 44+10=54 44+10=54 44+10=54

44+10=54 44+10=54 44+10=54 44+10=54

त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी

त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी

त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी

त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी

त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी त्रिलोकी

ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम

ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम

ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम

ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम

ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम ड्रम

बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश

बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश

बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश

बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश

बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश बृजेश

लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट

लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट

लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट

लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट

लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट लिफ्ट

त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल

त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल

त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल

त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल

त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल त्रिशूल

1. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
2. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
3. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
4. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
5. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
6. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
7. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
8. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
9. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
10. दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पग्गड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य शक्तिशाली
11. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
12. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
13. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
14. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
15. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
16. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
17. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
18. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
19. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
20. प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामी प्रकृति ज्वालामुखी पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ
21. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
22. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
23. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
24. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
25. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
26. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
27. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
28. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
29. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
30. व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसचिव
31. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
32. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
33. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
34. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
35. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
36. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
37. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
38. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
39. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
40. महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी
41. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
42. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
43. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
44. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
45. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
46. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
47. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
48. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
49. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
50. कोरिया यूनेस्को, अठ्ठारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख जलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
51. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
52. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
53. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
54. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
55. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
56. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
57. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
58. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
59. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
60. सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा एकत्र प्यासा हल्ला मजदूर
61. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
62. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
63. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
64. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
65. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
66. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
67. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
68. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
69. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
70. परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक
71. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
72. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
73. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
74. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
75. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
76. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
77. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
78. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
79. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
80. शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान
81. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
82. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
83. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
84. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
85. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
86. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
87. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
88. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
89. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
90. प्राचीन नवीन बल्लभ विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलाँगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
91. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
92. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
93. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
94. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
95. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
96. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
97. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
98. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
99. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
100. भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि उद्देश्य ब्राह्मण ह्वदेश
101. विश्लेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
102. विश्लेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
103. विश्लेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
104. विश्लेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
105. विशलेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
106. विशलेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
107. विशलेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
108. विशलेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
109. विशलेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र
110. विशलेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभी पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभी पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभी पर ऐसा प्रहार किया जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है कि ऐसा विद्दयावान मनुष्य अर्थात रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

1. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्राचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
2. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्राचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
3. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्राचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
4. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्राचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
5. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्राचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
6. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने इनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्रचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
7. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने इनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्रचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
8. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने इनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्रचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
9. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनेक गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्रचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
10. आजकल हमारे देश एवं प्रदेश में यह फैशन सा चल पड़ा है कि कुछ विशिष्ट लोग, दूसरों के द्वारा पहनाई गयी, सुगन्धित पुष्पों की माला को पहनने के तुरन्त बाद ही उतार देते हैं, उन्हें यह सम्मान सूचक माला ऐस लगती है जैसे किसी ने उनके गले में काला नाग लपेट दिया हो। हमारा प्रचीन साहित्य एवं इतिहास यह स्मरण कराता है कि सुमन माला को निकालने के कारण ही देवासुर संग्राम तक छिड़ गया था जिसमें कंठहार को निकालने के अपराध में देवराज इन्द्र सिंहासन से उतार दिये गये थे।
11. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता है, गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहूति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
12. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता है. गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहूति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
13. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहूति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
14. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहूति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
15. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहूति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
16. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाती है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहुति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
17. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाती है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहुति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
18. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भांग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहुति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
19. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहुति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
20. गले में डाली गयी माला की सुगन्ध स्वाभाविक ही नाक में प्रवेश कर जाती है जिससे भीतर समाई हुई दुर्गन्ध दूर हो जाती है, मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो जाता है, रोग-दोष भाग जाते हैं। शरीर में स्वस्थ और शुभ संकल्पों का सम्यक समीकरण जाग्रत हो जाता हैं। गले में डाली गयी माला का अपमान करने के ही कारण भगवान शिव की सती को, अपने ही पिता दक्ष द्वारा संचालित यज्ञ में आहुति देकर अपने शरीर को नष्ट करना पड़ा था, क्योंकि उनके पिता ने ऋषि द्वारा दी गई माला का अपमान किया था।
21. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
22. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
23. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
24. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
25. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
26. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
27. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
28. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
29. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
30. हमारे देश में जिस तरह नई शिक्षा नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक पुनर्गठन का कार्य शुरू किया गया है उसी प्रकार सोवियत संघ में शिक्षण पद्धतियों के विशेषज्ञों के साथ-साथ अध्यापकगण शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार के श्रेष्ठ तरीकों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। इस स्कल में ‘पेरेस्त्रोइका’ का नाम दिया जा रहा है।
31. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपना एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
32. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपना एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
33. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपना एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
34. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपना एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
35. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपना एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
36. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपने एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
37. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपने एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
38. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपने एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
39. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपने एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
40. डा॰ राम मनोहर लोहिया जो कि अपने समय के एक महान समाजवादी नेता थे एक बार कहा था कि जिस प्रकार तवे पर रोटी बार-बार पलटने से ठीक प्रकार से पक जाती है उसी प्रकार संसदीय लोकतंत्र में व्यवस्थाओं के बदलते रहने से लोकतंत्र मजबूत होता है अतः कोई भी व्यक्ति अपने एकछत्र, मनमाना शासन संचालित करने की चेष्टा नहीं करेगा।
41. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
42. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
43. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
44. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
45. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
46. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
47. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
48. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
49. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
50. मां वह शब्द है जिसमें बहुत से रहस्य छिपे हैं। मां शब्द एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, जिसके कारण ही सारे संसार के महत्वपूर्ण एवं पराक्रमशाली व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट स्थान एवं उद्देश्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सके थे। कोई मनुष्य किसी ऊंचे पद पर तभी पहुंच सकता है जबकि उसको बचपन में सही आदर्श एवं उन्नतिशील शिक्षा प्राप्त हुई हो।
51. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि उसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुराईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
52. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि उसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुराईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करत है।
53. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि उसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष ऩ्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुराईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
54. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि इसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुराईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
55. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि इसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुराईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
56. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि इसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सूधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुरईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
57. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि उसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुरईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
58. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि उसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य़ है समाज सुधार का कार्य़। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुरईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
59. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि इसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य़। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुरईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
60. प्रेस अर्थात समाचार पत्र प्रकाशन संस्था का प्रजातंत्र में बड़ा महत्व होता है। इस संस्था के द्वारा जनता तथा सरकार के बीच सदैव सम्पर्क बनाये रखा जाता है। प्रजातंत्र में प्रेस इतना शक्तिशाली होता है कि उसे चौथी सत्ता कहा जाता है। प्रेस इतना शक्तिशाली इसलिये होता है क्योंकि इसकी सौ, आँखे होती हैं। यह सरकार की नीतियों का समर्थन अथवा उनकी आलोचना राष्ट्रीय परिप्रक्ष्य में करके प्रत्येक बात को सुधारने का काम करता है। चूंकि प्रेस द्वारा जनता की सही भावना को उजागर करके सरकार के समक्ष न्याय के लिए रखा जाता है अतः यह सरकार को न्याय करने के लिए भी बाध्य करता है। इसके अतिरिक्त इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है समाज सुधार का कार्य। अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा यह समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के अंध विश्वासों, बुरईयों के विरुद्ध जनमत तैयार करके उन पर विजय पाने की दिशा में सक्रिय भूमिका भी अदा करता है।
61. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
62. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
63. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
64. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
65. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
66. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
67. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
68. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
69. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपजाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
70. प्राचीन कथाओं में मिस्त्र भी सहारा मरूस्थल का एक अंग था जो नील नदी की कृपा से बहुत उपचाऊ बन गया है। पूर्वी सहारा में ऐसे मरू उद्दानों का उल्लेख है जो बाद में एकदम गायब हो गये इन कथाओं पर आधुनिक वैज्ञानिक विश्वास नहीं करते।
71. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी। वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरुस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
72. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी। वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
73. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी। वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
74. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी। वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
75. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी। वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
76. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी। वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
77. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
78. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
79. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
80. लगभग दो वर्ष पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका की अंतरिक्ष शटल कोलम्बिया ने राडार संकेतों की मदद से ऐसी नदियों के संकेत भेजे थे जो आज लगभग 2 करोड़ वर्ष पूर्व सहारा में बहती थी वैज्ञानिको को यह मालूम है कि सहारा हमेशा में मरूस्थल नहीं था। वहाँ काफी आबादी थी विशेष रूप से प्राचीन नदियों के किनारे।
81. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
82. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
83. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
84. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
85. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
86. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
87. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
88. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
89. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
90. मुनष्य के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं, सत्ता सम्पदा और नैतिकता। ये तीनों ही बड़ी शक्तियाँ हैं। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्म विश्वास और आस्था की। इन्हीं तीनों के द्वारा मनुष्य का जीवन संचालित होता है, जब तक इनका संतुलन ठीक रहता है तब तक जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन यात्रा संतुलित रहती है। यदि इनमें आपस में असंतुलन पैदा हो जाता है तो मानव जीवन रथ चरमरा जाता है।
91. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
92. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
93. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
94. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
95. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्द्पि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
96. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
97. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
98. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
99. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
100. देशाटन, ज्ञान की वृद्धि का सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर एवं पूर्ण ज्ञान देशाटन द्वारा होता है, उतना अन्य किसी साधन द्वारा नहीं। यद्दपि पुस्तकों समाचार पत्रों के द्वारा भी उक्त ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु जितना पूर्ण और सर्वागींण ज्ञान देशाटन से प्राप्त होता है, उतना अन्य साधनों से नहीं।
101. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
102. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
103. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
104. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
105. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
106. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
107. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
108. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से, शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
109. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
110. महोदय किसी भी आदमी को अपने मताधिकार अर्थात वोट का प्रयोग मजहबी आधार पर नहीं करना चाहिए। इस प्रक्रिया को बन्द करने से ही लोकतंत्र मजबूत होगा। लोकतंत्र में वोट जुड़ा है व्यवस्था से शासन से। शासन जुड़ा है देश में कानून का राज्य स्थापित करने से। इसलिये वोट देश में कानून का राज्य स्थापित करने के लिए दिया जाना चाहिये। वोट वर्गभेद तथा विघटनकारी नारों व फतवे पर नहीं दिया जाना चाहिये।
111. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
112. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
113. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
114. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
115. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
116. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
117. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
118. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
119. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
120. सहारा संसार का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है। वहाँ हजारों वर्ग किलोमीटर के ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ यदा-कदा ही वर्षा होती है। उसका पूर्वी क्षेत्र तो ऐसा भाग है जहाँ शायद तीस चालीस साल में कभी एक बार वर्षा हो जाती है।
121. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
122. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
123. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
124. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
125. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
126. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
127. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
128. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
129. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरुरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
130. भारत देश में नदी जल प्रकृति की बहुमूल्य देन है। इस जल का उपयोग न सिर्फ आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है बल्कि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को खाद्य सामग्री की जरुरतों को पूरा करने के लिए जरूरी है। असमान वर्षा के कारण इस जल को एकत्र करने के लिए बांध और जलाशयों का निर्माण भी देश की उन्नति में सहायक सिद्ध होगा।
131. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
132. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
133. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
134. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
135. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
136. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
137. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
138. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
139. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
140. महोदय आजकल एवं कुछ शताब्दियों से भारतवर्ष की जनता के बीच इलाहाबाद शहर का नाम बड़ी श्रद्ध व लगन के साथ लिया जाता है। इसका कारण है कि वहाँ पर तीर्थराज संगम की महत्ता। इलाहाबाद शहर का नामकरण पहले प्रयाग था जो कि मुगल शासन काल के दौरान इसका नामकरण अल्लाहाबाद रखा गया, यही नाम कालान्तर में आगे चलकर इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
141. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
142. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
143. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
144. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
145. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
146. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
147. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
148. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
149. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन की मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
150. महोदय, देश की संसद हो या राज्यों की विधान सभाएं अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी ही सदन का मान मर्यादा का रक्षक माना जाता है। उसका सर्वोपरि दायित्व यह है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से सदन की कार्यवाही का संचालन करें। बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ समय से सदनों में हमारे ही सदस्यों द्वारा किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा किया जाता है जिससे कि सदन की कार्यवाही घंटो रूकी रहती है। इस प्रकार जनता के द्वारा टैक्स में वसूला गया मेहनत का पैसा व्यर्थ बरबाद होता रहता है। इस प्रकार के व्यवहार एवं आचरण से निश्चय ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थानों की महान क्षति होती है।
151. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इसे शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
152. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इसे शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
153. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इसे शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
154. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इस शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
155. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इस शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
156. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इस शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
157. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इस शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
158. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इस शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
159. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इस शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
160. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी मजदूरों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनायी गयी तेंदू पत्ता नीति ने एक ओर पूंजीपतियों की नींद हराम कर दी है वहीं दूसरी ओर अनेक संगठनों ने इसे शासक दल का प्रचार एवं शासकीय धन का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। इस जंगल में पाये जाने वाले पत्तों से लगभग 25 लाख आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार यह शासक दल का क्रांतिकारी कदम कहलायेगा क्योंकि इसके द्वारा 25 लाख रोजगार के साधन उपलब्ध होते है।
161. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
162. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
163. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
164. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
165. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
166. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
167. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
168. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
169. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव ऩहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।
170. महोदय, हमारे देश में सहकारिता जीवन का मुख्य आधार है तथा यह समाज का एक प्रमुख स्तम्भ है जिसके अभाव में जन्म से मृत्यु तक कोई भी कार्य संभव नहीं है। आज के युग में भी समाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक तीनों ही पहलुओं में सहकारिता या सहयोग का अपना महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए आज भी देहात में खेती में मदद करने में, जन्म विवाह, मृत्यु अवसरों पर आपसी सहयोग के अनगिनत उदाहरण आज भी देखे जा सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में सहकारिता का अर्थ ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में सहकारी समितियों के माध्यम से उनकी आर्थिक उन्नति से ही लगाया जाता है।

अभ्यास-2

जब तक हिन्दी भाषी हिन्दी को हृदय से स्वीकार नहीं करते तब तक वह राष्ट्र भाषा का स्थान नहीं पा सकती है। अक्सर यह सुनने में आता है कि हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक साहित्य या न्यायिक साहित्य कम है या नहीं के बराबर है, यह बात बिल्कुल निराधार है। मैं इस बात को दावे के साथ कह सकता हूँ कि यदि सरकार हिन्दी को पूर्णरूपेण सभी क्षेत्रों में ईमानदारी से लागू करें तो जो साहित्य हिन्दी भाषा में नहीं है, एक तो पर्याप्त साहित्य उपलब्द है ही अगर जो साहित्य उपलब्ध नहीं है, तो वह एक साल के अन्दर अवश्य उपलब्ध हो जायेगा।

इस सम्बन्ध में अक्सर यह सुनने में आता है कि हमारे यहाँ अभी स्नातकोत्तर पढ़ाई के लिए पर्याप्त साहित्य नहीं है। बड़ी गलत बात है अभी सरकार के द्वारा ही कुछ महीने पहले यहाँ पर एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था उस प्रदर्शनी में जिन पुस्तकों का प्रदर्शन किया थ उन पुस्तकों से यह बात स्पष्ट है कि हमारे यहां पर वैज्ञानिक न्यायिक और शास्त्रीय विषयों पर भी हिन्दी में पर्याप्त पुस्तकें हैं।

यदि श्रीमान जी मुझे इस विषय पर प्रकाश डालने का अवसर दें तो मैं इस विषय में एक उदाहरण देना पर्याप्त समझता हूँ। पहले समय में मैट्रिक पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी था और यह दलील दी जाती थी कि हमारे यहाँ पर मैट्रिक की पढ़ाई का पर्याप्त साहित्य नहीं है, लेकिन जब आवश्यकता होती है तब चीजें उपलब्ध हो जाती हैं ज्यों ही मैट्रिक में हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को सरकार ने माध्यम बनाया त्यों ही सारा साहित्य जो अभी तक नहीं था छः महीने में तैयार हो गया।

इसके पर्व भी मैं इस बात को अनेको बार कहता रहा हूँ कि साहित्य की तैयारी की एक योजना रसकार को बनानी चाहिये और देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विद्वानों को एक-एक पुस्तक अलग-अलग विषयों पर लिखने के लिए देनी जाहिए तथा उनसे करार कर लेना चाहिए और मेरा विश्वास है कि एक वर्ष के अन्दर कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जो तैयार न हो सके, तो साहित्य तैयार नहीं है यह बड़ी गलत दलील है। इस प्रकार की गलत दलीलों से राष्ट्र भाषा हिन्दी का अपमान ही होता है। जिस देश में राष्ट्र भाषा के प्रति, कुछ ऐसे लोग जो अपने को प्रगतिशील विचारों वाला मानते हैं तथा यह कहकर आलोचना करते हैं कि इस भाषा में विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग की जाने वाली शब्दावाली नहीं है, इस प्रकार का दृष्टिकोँ रखते हैं उन्हें देश भक्त या राष्ट्र भाषा का शुभचिन्तक नहीं माना जा सकता।

अभ्यास-3

महोदय, किसी भी देश के आर्थिक एवं व्यापारिक विकास में बैंकों की महत्वपूर्ण भमिका होती है। बैंकों का मुख्य कार्य जनता से धन जमा करना है तथा इस धन को राष्ट्र के उत्पादक एवं सामाजिक रूप से लाभदायक कार्यो हेतु ऋण के रूप में देकर उत्पादकता में वृद्धि करना है। परन्तु राष्ट्रीयकरण से पूर्व बैंक केवल कुछ चुने हुए विशिष्ट क्षेत्रों में बड़े उद्योगपतियों एवं बड़े व्यापारियों को ही ऋण सुविधायें प्रदान करते थे। जिसके कारण केवल कुछ ही हाथों में ही आर्थिक शक्ति का केन्द्रीयकरण हो रहा था।

वाणिज्यिक बैंक परम्परागत रूप से शहरी क्षेत्रों में ही स्तित होते थे एवं इनका मुख्य ध्येय लाभ अर्जित करना होता था, चूँकि ग्रामीण क्षेत्रों की शाखाओं से शुरु के वर्षो में लाभ नहीं मिल पाता था। अतः निजी क्षेत्र के बैकों ने ग्रामीण इलाकों में शाखाएं स्थापित करने में कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई। हमारे देश का कृषि क्षेत्र जिस पर हमारी सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था आधारित है एवं देश की 70% जनता अपने जीविकोपार्जन हेतु निर्भर है उसमें भी मार्च 1968 में कुल अग्रिमों का जो इन बैंको द्वारा दिया जाता था 22% ऋण दिया गया। इसके विपरीत बड़े उद्दोगों का हिस्सा कुल अग्रिम का 60.6% था। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि कुल ऋणों का प्रमुख हिस्सा बड़े उद्दोगों एवं बड़े व्यापारियों को दिया जाता था जिससे आर्थिक असंतुलन बढ़ता ही गया।

19 जुलाई, 1969 में निजी क्षेत्र के 14 बड़े व्यापारिक बैंको का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया, इस आधार पर ये बैंक सीधे सरकार के नियंत्रण में आ गये तथा शासन द्वारा निर्धारित नीति के अनुरुप कार्य होने लगा। 18 अप्रैल, 1980 को छः और बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। इस प्रकार लगभग 91% बैंक जमा राशि सरकार के नियंत्रण में आ गई। राष्ट्रीयकरण का सीधा तात्पर्य यह था कि बैंकिग उद्दोग पर कुछ प्रभावशाली लोगों का नियंत्रण समाप्त करना, जनता की बचतों को नियंत्रण करना, शासकीय योजनाओं को प्राथमिकताओं के आधार पर उत्पाद उद्देश्यों की ओर ले जाना और आर्थिक बदलाव के लिए बैंकों को एक माध्यम बनाना इत्यादि।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीयकरण के फलस्वरुप बैंको के दृष्टिकोण एवं कार्यपद्धति में व्यापक परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों के कारण वर्ग बैंकिंग का स्थान सामुदायिक बैंकिंग ने लिय जिससे समाज के कमजोर से कमजोर व्यक्ति को आसानी से ऋण एवं अन्य बैंकिंग सुविधाएं सुलभ हो रही हैं। बैंक अब उपेक्षित क्षेत्रों को सरकार के निर्देशानुसार प्राथमिकता के आधार पर ऋण देने हेतु प्रतिबद्ध है। ये क्षेत्र हैं कृषि, लघु उद्दोग, परिवहन, खुदरा व्यापार, लघु व्यवस्था, शिक्षा उपयोग ऋण कमजोर वर्गो को गृह निर्माण हेतु ऋण तथा निर्यात ऋण।

अभ्यास-4

वर्तमान युग, जिसे आधुनिक युग कहा जाता है, में राष्ट्रीय राजमार्गो का एक विशेष महत्व है। राजमार्ग न केवल परिवहन की दृष्टि से बल्कि अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो इनका महत्व और भी अधिक है, क्योंकि हमारे यहाँ परिवहन के अन्य साधन पूरी तरह से विकसित नहीं हो पा रहे हैं। प्राचीन काल से ही हमारे देश में सड़कों के निर्माण को काफी महत्व दिया जाता है लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय राजमार्गो के विकास और विस्तार के कार्य में विशेष तेजी आई है।

आज विज्ञान के क्षेत्र में जो प्रगति हो रही है, उससे परिवहन के अन्य साधनों का भी विकास सम्भव हो पाया है। विमान एवं रेलगाड़ियाँ परिवहन के क्षेत्र में काफी महत्व रखती हैं, लेकिन राष्ट्रीय राजमार्ग इन सबके बावजूद परिवहन का प्रमुख साधन बने हुए हैं, कारण यह है कि विमान एवं रेल सेवा के विस्तार की सम्भावनाएं सीमित है। इसलिए सरकार ने राजमार्गो के विकास पर जोर देकर सारे देश में इनका जाल सा बिछा दिया है फिर भी देश के पाहाड़ी एवं दूर दराज के ग्रामीण इलाकों में सड़कों की कमी है।

आजादी के पश्चात 1984 में राष्ट्रीय राजमार्ग की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हे इनके विकास की नई-नई योजनाएं बनी जिससे कुछ नये राजमार्गो का विकास हुआ एवं पुराने मार्गो की मरम्मत एवं रख-रखाव में तेजी आई। राजमार्गो के रख-रखाव एवं सुधार की जिम्मेदारी मुख्य रूप से राज्य सरकारों की ही है परन्तु संसाधनों की कमी के कारण प्रदेश सरकारें इस कार्य को उचित महत्व नहीं दे पाती हैं। इसके अतिरिक्त राजमार्गो के विकास के काम में राज्यों के बीच में कोई सामंजस्य भी नहीं है। इस कमी को दूर करने के ले राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण का गठन 1989 में क सरकारी अधिसूचना के जरे किया गया।

प्रथम चरण में प्राधिकरण तीन एक्सप्रेस वेज का निर्माण करेगा जिनकी कुल लम्बाई 812 किमी॰ होगी। इन राजमार्गो में बम्बई और पुणे के बीच 145 किमी॰ बड़ोदरा और बम्बई के बीच 422 किमी॰ एवं मद्रास और बंगलूर के बीच 325 किमी॰ सड़कें होंगी। इन पर 19 अरब रुपये खर्च आयेगा। एक्सप्रेस वेज की विशेषता यह होगी कि इन पर काफी तीव्र गति से वाहन चल सकेंगे, भूतल परिवहन मंत्रालय ने कुल 4500 किमी॰ लम्बे एक्सप्रेस वेज के निर्माण एवं सुधार का लक्ष्य रखा है। देश के आर्थिक विकास में राजमार्गो के योगदान को देखते हुये सरकार ने राजमार्ग निर्माण के कार्य को उद्दोग की शक्ल देने पर विचार कर रही है। सरकार का मत है कि राजमार्गो के निमार्ण विकास तथा विस्तार में सरकारी एजेंसियों के साथ ही निजी एजेंसियों का भी सहयोग लिया जाय।

इनके जरिए देश में राजमार्गो के निमार्ण में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकेगी। राष्ट्रीय राजमार्गो के निर्माण के बारे में सरकार ने एक उल्लेखनीय कदम यह उठाया है कि इस क्षेत्र में कंप्यूटरों का उपयोग शुरू किया जा रहा है इससे राजमार्गो की योजना बनाने में काफी सहायता मिलेगी इन सभी उपायों से देश में लोगों को यातायात की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी।

अभ्यास-5

वर्तमान सरकार जल्दी से कृषि पर निर्भरता कम करके लोगो को उद्दोगों में लगाने के लिए तत्पर है, संकलपबद्ध है, उतावली है। वह जानती है कि प्रदेश की सारी श्रमशक्ति खेती में नहीं लग सकती, उसका दूसरा उपयोग जल्दी से जल्दी तलाश करना होगा क्योंकि श्रमशक्ति हि प्रदेश को उन्नत और समृद्ध कर सकती है। यह ऐसा साधन है जिसका अपव्यय या जिसकी उपेक्षा प्रगति के रास्ते में बाधक है।

औद्दोगीकरण की दौड़ में उत्तर प्रदेश म.प्र. बिहार, राजस्थान के पिछड़ जाने का एक बड़ा कारण ऐतिहासिक है। अंग्रेज बम्बई, कलकत्ता, मद्रास पर आकर टिके तो आस-पास के क्षेत्रों के औद्दोगिक विकास को प्रथमिकता मिली, वहाँ औद्दोगिक विकास का वातावरण बना किन्तु उत्तर प्रदेश एवं अन्य राज्य अंग्रजों की आँखों के काँटे थे। सन् 1857 के पहले स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर सन् 1947 तक आजादी के हर तरह के आंदोलन में उत्तर प्रदेश एवं अन्य राज्य अग्रणी थे। उसकी सजा उसे आर्थिक उपेक्षा के रूप में मिली। यहाँ के फलते-फलते उद्दोग भी नष्ट कर दिये गये, नये उद्दोग लगाने की बात ही नहीं उठती थी।

आजादी के बाद सरकार ने औद्दोगिक विकास की ओर ध्यान दिया पर प्रदेश की साधनहीनता, उद्दमी मिजाज व औद्दोगीकरण की हवा का अभाव और कल-कारखाने लगाने के लिए आवश्यक पूर्व शर्तो के पूरा न होने के कारण इस दिशा में प्रगति धीमी रही। जैसे-जैसे सुविधाएं बढ़ती गयीं, साधन बढ़ते गये, उद्दम का मिजाज बनता गया, औद्दोगीकरण की हवा भी बनती गयी, नये-नये कल कारखाने लगने लगे। इन कारखानों ने उचितवातावरण बनाने में भी मदद दी। खेती पर निर्भरता कम होने लगी, अब जो रणनीति अपनायी गयी है उसमें बड़े विराट कारखानों से लेकर झोपड़ी के छप्पर के नीचे लगने वाले उद्दोगों तक एक साथ विकास हो रहा है। बड़े उद्दोगों के लिए उद्दोगपतियों को तो राजी किया ही जा रहा है, केन्दीय सरकार से भी सार्वजनिक क्षेत्र के ज्यादा से ज्यादा कारखानें लगाने का भी अनुरोध किया जा रहा है।

अभ्यास-6

ग्राम पंचायतें जनतन्त्रीय शासन व्यवस्था की पहली सीढ़ी है। प्रदेश सरकार का इस बात में गहरा विश्वास है कि जनता के लाभार्थ किसी भी योजना की शुरुआत जनतंत्र के बुनियादी ढाँचे से होनी चाहिए।

किसी भी योजना या कार्यक्रम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि जनता का उसमें कितना विश्वास है और कहाँ तक उसका सहयोग और समर्थन मिल रहा है। इसी उद्देश्य से वर्तमान सरकार द्वारा ग्राम प्रधानों और ब्लाक प्रमुखों के चुनाव जो क लम्बी अवधि से किन्हीं कारणों से नहीं हो पाये थे, कराये गये। ग्राम प्रधानों का यह चुनाव जिसमें लगभग 4 करोड़ 42 लाख मतदाताओं ने भाग लिया, गाँव स्तर के बुनियादी जनतंत्र का सम्भवतः संसार का सबसे बड़ा चुनाव था जो स्वयं में एक बड़ी उपलब्धि है।

ग्रमीण जनता की खुशहाली और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से 20 सूत्रीय कार्यक्रम और विशेष रूप से एकीकृत ग्राम्य विकास योजना की सफलता के लिए वर्तमान सरकार ने इन योजनाओं में ग्राम प्रधानों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने का निर्णय लिया तथा इन योजनाओं का लाभ, पात्र और जरूरतमंद लोगों को मिले, यह सुनिश्चित करने के ले शासन द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि एकीकृत ग्राम विकास योजनाओं के लिए सही लाभार्थियों का चयन गाँव सभाओं की खुली बैठकों में किया जाय।

पंचायत राज संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण और उनकी आय में वृद्धि करने लिए एक प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत चालू वित्तीय वर्ष में 2 लाख 88 हजार रुपये की धनराशि स्वीकृति की गई है। इस योजना के अन्तर्गत जिले की तीन सर्वश्रेष्ठ गाम सभाओं को जो अपनी आय में करों, शुल्क, भूमि, प्रबन्ध, सम्पति और अन्य साधनों से गत तीन वर्षो की तुलना में सर्वाधिक वृद्धि करेंगी, उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा। प्रथम पुरस्कार तीन हजार रुपये, द्वितीय पुरस्कार दो हजार रुपये तथा तृतीय एक हजार रुपये तक का होगा।

अभ्यास-7

भारत की सभ्यता एवं संस्कृति के विषय में यह बिना किसी विवाद के स्वीकार किया जाता है कि वह संयुक्त राज्य-अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के देशों की सभ्यता से बहुत पुरानी है। परन्तु साथ ही साथ इसमें कोई सन्देह नहीं कि आर्थिक दृष्टि से भारत एक अल्प विकसित देश है। भारत के प्राकृतिक संसाधन सम्पन्न हैं और उसमें विविधता भी है, लेकिन उसका समुचित विनियोजन होना बाकी हैं। भारत में अंग्रेजी शासन काल में यद्दपि अर्थव्यवस्था में कुछ परिवर्तन हुए हैं, तथापि यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस देश का आर्थिक ढाँचा मूलतः अविकसित है। नगरों में आर्थिक जीवन कुछ बदला हुआ नजर आता है, परन्तु उसका भारत की अर्थ-व्यवस्था पर व्यापक प्रभाव नहीं पड़ सका है। डी.के. रांगेणेकर के अनिसार भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप का अनुमान कुछ बृहद उद्दोगों अथवा बम्बई, कलकत्ता, मद्रास या दिल्ली के व्यापारिक जीवन से नहीं लगाया जा सकता।

18वीं शताब्दी की समाप्ति तक भारत साम्राज्यवादी शोषण का शिकार नहीं हुआ था। इसलिये सामान्ती उत्पादन सम्बन्धों के बावजूद भी यह देश ब्रिटिश भारत की तुलना में समृद्धि था। भारत की आर्थिक संस्थाएं, उत्पादन विधियां और तैयार वस्तुएं उस काल के किसी भी उन्नत देश की तुलना में नीचे स्तर की नहीं थी। भारत के आर्थिक विकास से प्रभावित होकर कार्ल .......... ने लिखा था, हाथ करघों और चर्खो तथा उन पर कार्य करने वाले हजारों बुनकर तथा जुलाहे भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी हैं।

युरोप में अनंत काल से इन भारतीय श्रमिकों द्वारा श्रेष्ठ सूती वस्त्रों का आयात होता रहा है और वहाँ से बदले में मूल्यवान धातुएं आती रही हैं। इसका भुगतान भारत को स्वर्ण और रजत के रूप में मिला करता था यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय अर्थव्यवस्था यूरोप के देशों से अच्छी थी, परन्तु इंग्लैंड में औद्दोगिक क्रान्ति हो जाने के बाद यूरोप में जो आर्थिक विकास का दौर प्रारम्भ हुआ तो ये देश विकास पथ पर अग्रसर होते ही गए तभी इस काल में अंग्रेजों को भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता मिल गयी। अंग्रेज शासकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में न केवल बाधायें डाली वरन् यहाँ के ढ़ाचे को नष्ट कर इंग्लैण्ड की पूरक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया।

अभ्यास-8

पिछले दिनों यह बात सामने आयी कि समृद्ध यूरेनियम बनाने सम्बन्धी अनुसन्धान को इसलिए उत्साहित नहीं किया गया क्योंकि भविष्य में हमारा नाभिकीय विद्दुत कार्यक्रम प्राकृतिक यूरेनियम का ही उपयोग करेगा। इस प्रकार के अनुसन्धान के विषय में मतभेदों की चर्चा थ लेकिन अब यह स्पष्ट हो गया है कि हमारे वैज्ञानिक भी इस बात पर एकमत नहीं हैं कि भविष्य में किस यूरेनियम ईधन को नाभिकीय केन्द्रों में इस्तेमाल किया जाये।

“यूरेनियम क्या है?” इस संदर्भ में सर्वप्रथम हम यह देखें कि प्राकृतिक यूरेनियम एवं समृद्ध यूरेनियम क्या है। यूरेनियम प्राकृतिक रूप में हमें आक्साइड के रूप में मिलता है और इसमें यूरेनियम 235 एवं यूरेनियम 230 पाये जाते हैं। प्राकृतिक रूप में पाये जाने वाले यूरेनियम 235 लगभग 0.07 प्रतिशत तथा शेष यूरेनियम 238 होता है यूरेनियम 235 ही प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाला एकमात्र ऐसा तत्व है जिसे नाभिकीय विखण्डन में उपयोग में लाकर ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। यदि प्राकृतिक यूरेनियम में यूरेनियम 235 की मात्रा बढ़ाई जाय जो नाभिकीय विद्दुत बनाने में ईधन के रूप में काम आ सकें तो इसे यूरेनियम समृद्धिकरण कहते हैं। कई बार यूरेनियम 238 को कृत्रिम तत्व प्लूटोनियम 239 में बदला जाता है जिसे नाभिकीय केन्द्रों में काम में लाया जा सकता है। इस प्रकिया में स्पष्टता यूरेनियम 235 मात्रा को अधिक करना होता है। तारापुर नाभिकीय केन्द्र के लिए हम जिस समृद्ध यूरेनियम का आयात कर रहे हैं उसमें यूरेनियम 235 की मात्रा 2.7 प्रतिशत होती है। भारत के तारापुर परमाणु बिजली गर के लिए जो समृद्ध यूरेनियम अमेरिका से आयात किया जाता था वह इस श्रेणी में आता है लेकिन अमेरिका भारत को नीचे गिराने तथा विश्व में अपनी चौधराहट को कायम रखने के लिए उस पर रोक लगा दी है जिसका सीधा तात्पर्य यह है कि वह भारत के परमाणु कार्यक्रम की देखरेख अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से कराने की कोशिश में लगा है जिससे कि अमेरिका के एजेन्ट भारत के परमाणु कार्यक्रम का सही आंकलन कर सकें।

अभ्यास-9

माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से, शिक्षामंत्री जी ने जो प्रस्ताव सदन के सामने प्रस्तुत किया है, उसका समर्थन करने के लिए खड़ा अवश्य हुआ हूँ लेकिन क्या माननीय मंत्री महोदय जी यह बताने की कृपा करेंगे कि हमारे देश में शिक्षा की नीति का आधार क्या है। शिक्षा की नीति में सबसे प्रमुख बातें क्या होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में मेरे विचार इस प्रकार हैं कि अपने देश में वे तमाम बच्चे जो पढना चाहते हैं या जिनके माता पिता पढ़ाना चाहते हैं उनको शिक्षा प्राप्त करने का अवसर सुलभ होना चाहिए दूसरी बात यह है कि हमारे देश के गरीब लोगों के लिए शिक्षा सस्ती होनी चाहिए और तीसरी बात यह है कि शिक्षा मिलने के बाद इस बात की गारन्टी होनी चाहिए कि जो लोग गढ-लिख कर निकलें उनकों किसी न किसी काम में लगाया जा सकें।

मेरा आशय यह है कि शिक्षा नीति को इन तीन कसौटियों को ध्यान में रखकर व्यवहार में लाया जाना चाहिए। क्या शिक्षा नीति यहाँ की सस्ती है, क्या सभी को सुलभ है तथा क्या वह रोजगार तलब है। मान्यवर इन तीन कसौटियों पर विचार करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे और यह सदन भी इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि न तो शिक्षा सुलभ है न सस्ती है और न यह रोजगर तलब है। आज शिक्षा के अन्दर भी वर्ग बने हुए है। क्या शिक्षा हाई क्लास के लोगों के लिए है जो कि उन लोगों को पब्लिक स्कूलों के माध्यम से दी जाती है और वहां पर जो पढ़ते हैं उन पर कई सौ रुपये प्रति माह व्यय होता है।

दूसरी शिक्षा कामन विद्यार्थियों के लिए है, साधारण विद्यार्थियों के लिए है, साधारण विद्यार्थियों का अर्थ है गांवों के गरीब बच्चे, जहाँ स्कूल में टाट पट्टी भी नहीं तथा बैठने के लिए भवन भी नहीं है, वहाँ पर किताब भी नहीं है, जहाँ पर ब्लैक बोर्ड भी नहीं है। इसके अतिरिक्त इसमें से कुछ ऐसे स्कूल भी है जहाँ यदि जगह है तो वहाँ मास्टर नहीं हैं। इस प्रकार यहाँ शिक्षा की यह दशा कर दी गई है एक शिक्षा उच्च वर्ग के बच्चों के लिए है तथा एक शिक्षा साधारण वर्ग के लोगों के लिए है। इस तरह शिक्षा के क्षेत्र में हमारे देश और प्रदेश में जो अन्याय हो रहा है यह बात हमारे सामने कई वर्षो से चली आ रही है। कुछ दिनों से यह चर्चा सदन में हो रही भी कि शिक्षा इस तरह निर्धारित की जाये कि उसमें एक समानता लाई जाये और उसके लिए एक पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाये।

अभ्यास-10

हमारे प्रदेश ने वर्ष 1990 में विभिन्न क्षेत्रों में सीमित साधनों तथा प्राकृतिक आपदाओं के बावजूद प्रगति के नवीनतम, कीर्तिमान स्थापित किये हैं। खाद्दान्न उत्पाद बढ़ाने के लिये कृषि निवेशों की आपूर्ति की गई तथा कृषकों की समस्यओं के समाधान के लिए व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाये गये। मुख्यमंत्री कें कुशल नेतृत्व में जो रणनीति अपनाई गई उसके परिणामस्वरुप विशेष रूप से कृषि तथा औद्दोगिक उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

प्रधानमंत्री के बीस सूत्रीय कार्यक्रम में कम से कम दस सूत्रों के अन्तर्गत शत-प्रतिशत से अधिक की उपलब्धि करके सामाजिक-आर्थिक विकास को नया आयाम दिया गया औरगरीबी की रखा के नीचे जीवन बसर करने वालों के जीवन में एक नया सवेरा लाने का प्रयास किया गया। बैंको के माध्यम से शिक्षित बेरोजगारों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के परुवारों को वित्त पोषण का लाभ सुनिश्चित कराया गया। कानून और व्यवस्ता के मोर्चे पर निरन्तर चौकसी के फलस्वरूप राज्य में सभी हस्तक्षेत्रीय अपराधों में कमी हुई तथा शान्ति व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार हुआ। असामाजिक तत्वों पर प्रभावी नियंत्रण रखा गया जिससे निर्बल वर्गो को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त हुई।

त्वरित औद्धोगिक विकास के लिए प्राभावी औद्धोगिक नीति अपनाकर उपयुक्त औद्धोगिक वातावरण का सृजन किया गया। राज्य में केन्द्रीय क्षेत्र के गैसों पर आधारित चार-चार उर्वरक कारखानों के अतिरिक्त अन्य कारखानों को स्थापित करने की स्वीकृति प्राप्त की गई तथा 4356 लघु एवं ग्रामीण औद्धोगिक इकाईयों की स्थापना की गयी जिससे साठ हजार से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। कृषि और कृषि से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम के समुजित विस्तार के लिये राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक से एक अरब चार करोड़ रूपये की पुनर्वित सहायता प्राप्त करके इस प्रदेश ने सम्पूर्ण देश में इस वर्ष प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अभ्यास-11

खादी ग्रागोद्दोग हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह उद्दोग जहां एक ओर हमारी राष्ट्रीयता की पुनीत भावनाओं से जुड़ा है और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ग्राम विकास की मौलिक विचार धारा को प्रतिबिम्बित करता है, वहीं गांवों के लाखों निर्धन तथा निर्बल वर्गो के लोगों के लिए रोजगार का सर्वाधिक लोकप्रिय तथा सरल माध्यम है।

खादी ग्रामोद्दोग का व्यापक प्रसार कर तथा सम्पूर्ण ग्रामीण अंचल में असका जाल बिछाकर बहुत बड़ी सीमा तक वर्तमान बेरोजगारी की समस्या का समाधान किया जा सकता है नगरवासियों को भी इससे रोजगार का लाभ दिलाया जा सकता है। इस दृष्टि से अस उद्दोग को आज अधिकाधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता है। प्रदेश में खादी ग्रामोद्दोग के कार्यो को सातवीं योजना अवधि में कम से कम दुगुना करने के लिए अविलम्ब ठोस तथा कारगर उपाय किये जाने चाहिए।

इस सन्दर्भ में यह भी आवश्यक है कि खादी ग्रामोद्दोग ते व्यापक प्रसार के साथ-साथ इसके उत्पादन में गुणात्मक सुधार लाकर इसे अधिक लोकप्रिय बनाया जाय। खादी से जुड़े मूलभूत उद्देश्यों से बिना विचलित हुए खादी उद्दोग का आधुनिकीकरण और विकास, इसकी प्रोन्नति तथा समृद्धि के लीए आवश्यक है। इसके साथ ही प्रचलित विपणन प्रवृत्तियों, वर्तमान जन-आकांक्षाओं और उपभोक्ताओं की पसन्द को भी ध्यान में रखाना होगा। चर्खे के आधुनिकीकरण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

शासन खादी ग्रामोद्दोग को प्रोत्साहित करने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा है। इसके विकास व प्रोन्नति के लिए एक व्यवहारिक योजना बनाई जा रही है, जिसको सातवीं योयना अवधि में कार्यान्वित किया जायेगा। आशा है असके लिए खादी उद्दोग के क्षेत्र में अनुभवी लोग तथा इसके विशेषज्ञ भी अपना योगदान देंगे। शासन इस उद्दोग को ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम बनाने के लिए कृतसंकल्प है और इसके मार्ग में आने वाली बाधाओं तथा समस्याओं का निदान करने की दिशा में पूर्ण प्रयासरत है।

इसके आतिरिक्त खादी के वस्त्रों को पहनने से व्यक्ति में स्वेदशी की भावना उत्पन्न होती है तथा व्यक्ति को यह स्वाभाविक रूप से अनुभति होती है कि उसने बेरोजगारी जैसी भीषण समस्या के समाधान हेतु अंशमात्र योगदान दिया है। हमारे देश के अधिकाधिक लोगों में यह भावना यदि उत्पन्न हो जाये तो इससे रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में बहुत सहायता मिलेगी तथा विदेशी कपड़ों के लिए जो बहुमूल्य विदेशी मुद्रा चुकानी पड़ती है, उससे बचा जा सकता है।

अभ्यास-12

संयुक्त राष्ट्रसंघ के ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन की मांग वैसे तो पिछले तीन दशकों में अनेकों बार उठायी जा चुकी है, लेकिन अब यह मांग जोर पकड़ती दिखाई दे रही है। कई देशों के राजदूतों तथा भारतीय नेताओं ने अस संगठन के ढ़ाचे को अधिक प्रजातांत्रिक बनाने तथा सुरक्षा परिषद के मुकाबले संयुक्त राष्ट्र महासभा को अधिक अधिकार सौंपे जाने पर बल दिया है। ध्यान रखने की बात यह है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ का गठन इसलिए हुआ था कि युद्ध न हों। इसके पहले ‘लीग आफ नेशन्स’ के रहते हुए भी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जो तबाही हुई उसी चिन्ता और चिन्तन के फलस्वरुप 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्रसंघ अस्तित्व में आया।

इसके चार्टर में पहला उद्देश्य यही घोषित हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बरकरार रखी जाय। संगठन में सुरक्षा परिषद को केन्द्रीय महत्व दिया गया। उसमें मूलतः पाँच स्थायी सदस्यों की व्यवस्था की गयी। पाँच स्थायी सदस्यों-अमरीका, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन को वीटो पावर (निषेधाधिकार) से सम्पन्न किया गया ताकि फिर किसी विश्व युद्ध की पुनरावृत्ति नहीं हो। लेकिन यह विशेष व्यवस्था ही गहरे मतभेदों का कारण बन गयी। प्रारम्भ मे अमरीका ने चीन को स्थायी सदस्य मानने के बजाय फारमोसा को चीन मानकर उसे सुरक्षा परिषद में बिठाये रखा 25 अक्टूबर सन् 1971 में जाकर चीन को वास्तविक प्रतिनिधि होने की मान्यता दी गयी।

इसके पूर्व भी सुरक्षा परिषद के ढ़ाचे को बदलने की माँग बराबर उठती रही थी। इसीलिए सन् 1965 में सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्यों की संख्या छः से बढ़ाकर दस करनी पड़ी थी फिर भी जो असंतोष था वह कम नहीं हुआ। वस्तुतः संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों को वीटो पावर और परिषद की केन्द्रीय भूमिका को लेकर सदस्य देशों को मुख्यतः दो शिकायतें रहीं है। पहली यह कि परिषद में वीटो पावर के जरिये द्वितीय विश्वयुद्ध के चार विजेता देशों सोवियत संघ, अमरीका ब्रिटेन और फ्रांस ने अपना वर्चस्व बना रखा है। यह संयुक्त राष्ट्रसंघ की इस गोषणा के विरूद्ध है कि सभी सदस्य देशों को समानता का अधिकार होगा। वीटो पावर (निषेधाधिकार) वस्तुतः विशेषाधिकार है। दूसरी शिकायत यह है कि सुरक्षा परिषद के होते हुए भी क्या युद्धो को रोका जा सका है? यह सही है कि राष्ट्रसंघ के अस्तित्व में आने के बाद कोई ऐसा विश्वयुद्ध नहीं हुआ जिसमें महाशक्तियां या बड़े देश प्रत्यक्ष रूप से आमने-सामने खड़े हुए हों। लेकिन विश्व भर में युद्ध तो होते ही रहे।

वियतनाम युद्ध लम्बा खिचा ही भारत-पाकिस्तान के बीच तीन युद्ध हुए, अरब-इसराइल युद्ध और हाल ही में इराक के विरुद्ध सुरक्षा परिषद की सहमति से जो युद्ध हुआ वह एक तरह का सीमित विश्वयुद्ध ही था। इस युद्ध से यह बात भी सामने आयी कि अगर सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य एक जुट हो जाएं तो किसी भी दूसरे देश को रौंद सकते हैं और युद्ध को जायज भी ठहरा सकते हैं। इस तरह सुरक्षा परिषद की केंन्द्रीय भूमिका के कारण संयुक्त राष्ट्रसंघ का उद्देश्य ही कुंठित हुआ जा रहा है और इसीलिए परिषद के बजाय महासभा को अधिक अधिकार सौंपे जाने की माँग उचित और समायिक हो गयी है।

अभ्यास-13

प्रचीनकाल में भारतवर्ष प्रत्येक दृष्टिकोण से विश्व के सर्वाधिक सपन्न देशों में था। इसे अन्य देशों के लोग सोने की चिड़िया के नाम से पुकारते थे। समय बदला इतिहास ने करवट ली, भारतीयों की मूर्खता के कारण अनेक बार विदेशियों ने हमारे देश पर आक्रमण किये, इसे हर तरह से हानि पहुंचाई गई। एवं ज्ञान-विज्ञान से संबंधित अनेक ग्रन्थों को विदेशी या तो उन्हें उठा ले गए अथवा उन्हें नष्ट कर दिया गया। विज्ञान की ऐसी बहुत सी खोजें जिन्हें भारतीय ऋषि मुनि बहुत पहले से ही ज्ञात कर चुके थे, उन खोजो को, पाश्चात्य वैज्ञानिकों का ज्ञान का भण्डार, वर्तमान समय के लोग मानते हैं। मैं अपने इस लेख में भारतीय जनता को एक ही प्रमाणिक जानकारी दे रहा हूँ जिसके बारे में यह माना जाता है कि यह खोज पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा की गई है।

ग्रह नक्षत्रों की खोज, उनकी गति, आकार-आकर्षण शक्ति, रंग किरणें आदि की खोज आधुनिक विज्ञान की देने नहीं है जिसकी आयु अभी लगभग तीन सौ वर्षो की है। आज से हजारों वर्ष पूर्व ही भारतीय ऋषियों ने इसका ज्ञान प्राप्त कर लिया था, बुध ग्रह सूर्य के सबसे निकट का ग्रह है यह सूर्य से 27 अशं से अधिक दूर नहीं जा सकता। यह सूर्योदय से एक घंटा पूर्व उसी समय दृष्टिगोचर होता है, अब सूर्य से इसकी दूरी तेरह अंश अथवा उससे अधिक हो आज के वैज्ञानिक अभी भी यह सोचकर चकित होते हैं कि किस प्रकार भारतीय ऋषियों ने केवल चर्म धातुओं द्वारा इस ग्रह की खोज की और इसे तारों में स्थान न देकर ग्रहों में स्थान दिया। ब्रह्माण्ड के ग्रहों, उपग्रहों, धूम्र-केतुओं,नीहारिकाओं, आकाशगंगा आदि को देखकर मनुष्य के मन में इनके संबंध में जानने की जिज्ञासा अनादि समय से रही है। भारत इस दिशा में सदैव अग्रणी रहा है यहां के ज्योतिर्विद और मनीषीगण बड़ी श्रम साधना और समर्पण के साथ रात्रि के अंधकार में आकाश में ज्योर्तिमान इन ज्योतिमय पिण्डों के संबंध में सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातों की जानकारी प्राप्त कर काल गणना का ज्ञान इन ज्योति पिण्डों की रूप रेखा एवं दूरी का मापन करने में सफल सिद्ध हुए। अतः यह कहना बिल्कुल गलत होगा कि सौर धब्बों की खोज गैलीलियों ने की। वास्तव में विश्व में सर्वप्रथम सौर धब्बों की खोज वराह मिहिर ने की।

अभ्यास-14

किसी भी राष्ट्र के विकास की दर उसके पूँजी निर्माण, बचत, प्रोत्साहन एवं, वरीयता के आधार पर उत्पादक विनियोजन का परिणाम है। इस दृष्टि से यदि अब तक अर्जित की गई उपलब्धियों का विश्लेषण किया जाय तो सहज रूप से ज्ञात होगा कि इस दिशा में किये गये प्रयत्नों के मुख्य केन्द्र बिन्दु नगरीय क्षेत्र रहे हैं।

ग्रामीण अंचल जहाँ इसका असीमित क्षेत्र हैं, अब भी अपेक्षाकृत उपेक्षित हैं। इसमें दो राय नहीं कि सहकारी संस्थायें इस राष्ट्र निर्माण के महत्वपूर्ण कार्य़ के लिए एक आदर्श एवं उपयुक्त अभिकरण है और इनका संस्थागत जाल भी पूरे प्रदेश में फैला हुआ है फिर भी इस ओर नियोजित प्रयासों की कमी क्यों हैं? यह एक विचारणीय बिन्दु है। सहकारिता का सार्वोपरि उद्देश्य मितव्ययिता एवं बचतों को प्रोत्साहन देना तथा बचतों को उत्पादक अवसर प्रदान करना है। परन्तु जहाँ तक ग्रामीण बचतों को प्रोत्साहन एवं सेकलन का प्रश्न है, आज की कार्यपद्धति में कदाचित इस कार्य पर संतुलित बल नहीं दिया जा रहा है। यद्दपि सहकारी बैंको द्वारा संचयनिक्षेप कार्य में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ की गई हैं फिर भी ग्रामीण बचतों के क्षेत्र एवं सम्भावना को देखते हुए यह कहना गलत न होगा कि इस ओर से हम कुछ उदासीन अवश्य है।

बचतों के संकलन एवं निक्षेप संचय के कार्य की आज की पद्धति का यदि हम विश्लेषण करें तो पायेंगे कि यह व्यवस्था ग्राहक, जमाकर्ता के पहल पर आधारित है, जबकि इसे संस्थाओं के पहल पर आधारित होना चाहिए। यहां यह कहना स्वाभाविक होगा कि जमारासि सहकारी ऋण संस्थाओं के लिए मुख्य आय स्त्रोत है और इस पर उनके आन्तरिक साधनों की सुदृढ़ता एवं प्रबन्ध संचालक की सफलता निर्भर करती है। जिन संस्थानों की जमाराशि अच्छी होगी वे अपने सदस्यों की सेवा सरल एवं उदार शर्तो पर समय से करने में समर्थ होगी।

अभ्यास-15

किसी देश, राष्ट्र तथा समाज के विकास तथा समृद्धि में पत्रकारिता की अहं भूमिका होती है। उच्च स्तरीय पत्र तथा स्वस्थ पत्रकारिता किसी देश की धमनी होती है। जिस प्रकार स्वस्थ शरीर में धमनियाँ रक्त संचार कर शरीर को स्फूर्ति प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक सुधार व प्रगति जैसे कार्यो में स्वस्थ पत्रकारिता का उल्लेखनीय महत्व होता है, साहित्य समाज का दर्पण होता है, किन्तु इस कथन का एक पहलू और भी है। जहाँ एक साहित्य समाज का दर्पण होता है, वहीं दूसरी तरफ साहित्य से नये समाज का निर्माण भी होता है अर्थात् साहित्य किसी देश की समृद्धि, व्यापार तथा सामाजिक व्यवस्थाओं को नयी दिशा प्रदान करता है। बिना किसी साहित्य के किसी अच्छे समाज की कल्पना कोरी कल्पना ही सिद्ध होगी।

पत्रकारिता का अपना इतिहास है, पत्रकारिता के प्रतीक स्वरूप सर्व प्रथम इटली में समाचार पत्र प्रकाशित हुआ इसके बाद इंग्लैंड में भी समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ इसके बाद भारतवर्ष में पत्रकारिता काफी देर से मुगलकाल में आरम्भ हुई। इसके पहले सूचनायें या संदेश घोड़े तथा मानव द्वारा व्यक्तिगत तौर पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाये जाते थे।

पत्रकारिता आज समाज तथा राष्ट्र की अभिन्न अंग बन चुकी है क्योंकि किसी भी भाषा तथा साहित्य के विशुद्ध सृजन ने जनसामान्य को इतना लाभ नहीं पहुंचाया जितना कि इन्हीं भाषाओं के माध्यम से होने वाली पत्रकारिता ने इसने एक ऐसी नयी साहित्यिक रूपरेखा समाज के समक्ष प्रस्तुत की जिससे जनसामान्य के लोग ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, धर्म तथा सामाजिकता से सम्बन्धत नित्य नई नई सूचनाएँ बड़ी आसानी एवं कम खर्च में प्राप्त कर अपनी जिज्ञासाओं को शान्त कर लेने लगे हैं।

स्वस्थ पत्रकारिता का यह कर्तव्य है कि राष्ट्र की जीवन समस्याओं को देश के कर्णधारों के समक्ष रखें एवं उन समस्याओं के निराकरण के उपाय भी जनसामान्य एवं कर्णधारों के समक्ष रखें। किसी भी देश में अनेक प्रकार के लोग अनेक विविधताएँ लिए अलग-अलग अपनी पहचान रखते हैं, किन्तु उनको एक सूत्र में बाँधकर राष्ट्रीय एकता बनाये रखना पत्रकारिता के क्षेत्र में आता है।

अभ्यास-16

भारत जैसे लम्बे चौड़े देश के लिए राष्ट्रीय जल नीति वास्तव में बहुत आवश्यक है। इस विषय में अभी हाल ही में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में जल संसाधनों के प्रति व्यापक तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाने के लिए एक गोष्ठी हुई थी। गोष्ठी में विचार इस बात पर नहीं किया गया कि किस राज्य को कितना पानी मिलना चाहिए बल्कि देश में उपलब्ध पानी का अधिकाधिक सम्भव उपयोग किया जाय।

देश में अभी तक राष्ट्रीय जल नीति या राष्ट्रव्यापी योजना नहीं बनी जिसके परिणामस्वरुप तमाम पानी वह जाता है। अनुमानतः लगभग 60 प्रतिशत पानी व्यर्थ बह जाता है। प्रतिवर्ष देश का बहुत बड़ा भू-भाग कहीं बाढ़ की चपेट में आता है तो कहीं सूखा पड़ जाता है इसके अतिरिक्त देश में अनेक क्षेत्रों में पानी का घोर अभाव है।

काफी समय से यह माँग की जाती रही है कि देश में कोई राष्ट्रीय जल नीति होनी चाहिए और जहाँ पानी की अधिकता है वहां से अभाव वाले क्षेत्रों में पहुंचाया जाय। गंगा, कावेरी, ब्रह्मपुत्र तथा अन्य बड़ी नदियों से नहरें निकालने के सुझाव दिये जाते रहे हैं तथा यह भी सुझाव दिये गये थे कि राज्य की नदियों को राष्ट्रीय नदी माना जाय।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने एजेंसियों के माध्यम से भारत के जल संसाधनों का संर्वेक्षण कराया जिसके द्वारा ज्ञात हुआ कि भारत जमीन के ऊपर के अपने जल का केवल 40 प्रतिशत भाग ही इस्तेमाल कर पाता है। इससे स्पष्ट हे कि अगर देश की विभिन्न नदियों का अधिक जल नहरों आदि के माध्यम से अभाव वाले क्षेत्रों में जैसे तेलंगाना, गुजरात, राजस्थान हरियाणा आदि में पहुंचाया जाय तो देश में सिंचाई का भी संकट दूर हो सकता है तथा जल परिवहन की तमाम परियोजनायें भी कार्यान्वित की जा सकती है। इस कार्य में जो बाधाएं एवं विवाद हैं उन्हें व्यापक तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाकर ही हल किया जा सकता है।

अभ्यास-17

अध्यक्ष महोदय खेती में उन्नति न होने का कारण क्या है? उसका एक कारण यह है कि खेती से सम्बन्धित जितने विभाग हैं उनमें आपस में मेलजोल नहीं है। खेती के लिए अच्छी खाद की चरूरत है, पानी की चरूरत है, औजारों की और धन की जरूरत है, इस सारी चीजों के लिए अलग-अलग विभाग हैं। मालूम ऐसा पड़ता है कि उनका आपस मे कोई सम्बन्ध नहीं है। वे आपस में मिलकर कोई योजना नहीं बनाते जिससे खेती की जरूरतें पूरी होती। इसीलिए जब तक उनमें आपस में मेलजोल नहीं होगा तब तक खेती की उन्नति नहीं हो सकती है। दूसरा कारण यह है कि योजना की बिल्कुल कमी है।

इसके अलावा कृषि कालेजों से निकले हुए जो ग्रेजुएट होते हें, जो खेती की बातों को जानते हैं उनमें से एक भी आदमी खेती करने के लिए तैयार नहीं है, सभी प्रोफेसर बनने के लिए तैयार हैं। खेती के लिए कोई तैयार नहीं है, एक बात मैं माननीय मंत्री जी से विशेष रूप से कहना चाहता हूं कि अधिक उपज न होने का एक कारण यह है कि जो खेत में काम करते हैं वे उसके मालित नहीं हैं। खेत किसी और का है और काम कोई और कर रहा है। इसलिए मेरा कहना यह है कि किसानों में जब तक यह भावना पैदा नहीं होगी कि यह मेरी भूमि है तब तक अधिक उपज नहीं हो सकती। इसलिए आप जब तक भूमि सुधार नहीं करेंगे तब तक कोई बात बनने वाली नहीं है। दुर्भाग्य से इस देश में खेती करने वाले बहुत कम लोग ही जमीन के मालिक हैं।

खेती की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि सरकार खाद, बीज का उचित मूल्य निर्धारित करें, छोटे किसानों की लगान को कम किया जाय और उनकी उपज का उचित मूल्य दिया जाय तथा बिचौलयों से उनको बचाया जाय, एसी बात नही कि सरकार ने इस विषय में कुछनहीं किया है लेकिन नौकरशाहों के कारण ही ठीक ढंग से अमल में नहीं लाया जा सका है। इस प्रकार के आरोप नौकरशाहों को इन आरोपों से छुटकारा दिलाने के लिए सरकारी योजनाओं को स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वयन करने का जो प्रस्ताव किया हे वह स्वागत योग्य है।

अभ्यास-18

भारत का प्राचीनतम खेल तीरंदाजी आज सरकार की दोषपूर्ण खेल नीतियों के दुर्भाग्यपूर्ण शिकंजे में जकड़कर पूरी तरह उपेक्षित है। यही एक ऐसा खेल बचा है जिसमें भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ कर दिखाने की थोड़ी बहुत उम्मीदें बची हैं सरकार और खेल संघों की इस उपेक्षापूर्ण नीति के चलते अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तो भारत की किसी भी खेल में कोई अच्छी साख नहीं रह गई है। यदि यही स्थिति रही तो धीरे-धीरे लगभग रह खेल पतन की गर्त में समा जायेगा, इन्हीं उपेक्षाओं और खेलों में कुंठित राजनीति के समावेश ने तो भारत को विश्व स्तर पर कहीं का नहीं छोड़ा है। लगभग प्रत्येक खेल में विश्व स्तर पर हम कहीं नहीं टिक पाते हैं।

भारत में सर्वाधिक बढ़ावा यदि किसी खेल को दिया जाता है तो वह है, क्रिकेट परन्तु क्रिकेट संघो की गंदी आंतरिक राजनीति ने इसका भी बेड़ा गर्क कर दिया है। इसी तरह किसी जमाने में विश्व की सर्वश्रेष्ठ समझी जाने वाली भारतीय हाकी भी आज पतन के उस कगार पर है जहाँ से उसकी वापसी लगभग असंभव ही दिखाई पड़ती है। इसी तरह प्राचीन भारत के महानतम धनुर्धरों श्रीराम, अर्जुन, कर्ण आदि की महान परम्परा का निर्वाह करने वाला आज एक भी तीरंदाज भारत में नहीं है। जब किसी भी प्रतियोगिता में भारतीय तीरंदाजी टीम हिस्सा लेती है तो उस समय महाभारत के महानतम योद्धा अर्जुन की याद अवश्य सताती है। काश यदि अर्जुन जैसा कोई होता तो तीरंदाजी में भारत का कोई सानी नहीं होता।

हाल ही में नई दिल्ली में सम्पन्न हुई चार देशों की तीरंदाजी प्रतियोगिता में भारत ने टीम चैम्पियनशिप तो अवश्य चीती परन्तु व्यक्तिगत मुकाबलों में चीन का तीरंदाजी में वर्चस्व रहा। किसी भी प्रतियोगिता में टीम चैम्पियनशिप से ज्यादा महत्व व्यक्तिगत स्पर्धाओं का ही होता है। इस प्रतियोगिता में मेजबान भारत सहित भूटान, चीन, यूगोस्लाविया व सिंगापुर ने हिस्सा लिया था। भारत और चीन को छोड़कर अन्य देसों के तीरंदाच प्रभावशाली प्रदर्शन न कर सकें। कुछ समय पूर्व तक तीरंदाजी में चीन काफी पिछड़ा हुआ था परन्तु उनके तीरंदाजों ने आशा के विपरीत अच्छा प्रदर्शन करते हुए इस खेल में भी अपना दबदबा कायम कर लिया । भारत ने गत वर्ष एशिया कप, विश्व कप और ओलम्पिक में दक्षिण कोरिया के तीरंदाजों को पछाड़ कर एक सनसनी फैलायी थी और एशिया कप प्रतियोगिता में टीम चैम्पियनशिप पर कब्जा करके चीन की चुनौतियों को तोड़ते हुए अपना दबदबा कायम किया था।

जो भी हो सफलता और असफलता तो खेलों में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और जो बेहतर प्रदर्शन करता है सफलता उसी के कदमों को चूमती है। इस दौरान भारत ने कई अंतराष्ट्रीय प्रतियोताओं में हिस्सा लिया फिर भी आज तीरंदाजी अन्य खेलों की तुलना में काफी उपेक्षित है। स्थिति तो यह है कि यही एकमात्र खेल बचा है जिसमें भारत के तीरंदाजों से उम्मीदें की जा सकती हैं। इसके बावजूद इस खेल के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैये का कारण तो पूरी तरह समझ के परे हैं। सरकार को भारत के इस प्राचीनतम खेल को हर संभव बढावा देकर खिलाड़ियों को आधुनिक उपकरणों सहित हर संभव सुविधायें प्रादान की जानी चाहिए ताकि कम से कम इसी खेल में पदक जीतने की उम्मीदें जीवित रहें।

अभ्यास-19

दुनियाँ अब इलेक्ट्रानिक (वैद्दुतिकी) युग में प्रवेश कर रही है। इस नए युग का प्रतीक है संगणक तेजी से फैलता संगणकों का जाल दुनियाँ को ज्यादा चुस्त, कार्यकुशल और गतिशील बना रहा है। समृद्ध देशों में तो स्थिति यह है कि घर हो या दफ्तर या कोई कारखाना संगणक हर जगह सेवा के लिए हाजिर है इसमें कोई शक नहीं कि संगणक काम करने का आसान और सस्ता माध्यम है मगर इसका दूसरा और अंधकार युक्त पहलू यह भी है कि धोखाधड़ी, जालसाजी और तोड़-फोड़ का भी आसान साधन है इसने अपराधों की एक नई किस्म को जन्म दिया है जिन्हें आज संगणक अपराध के नाम से जाना जाता है। जैसे जैसे संगणकों का जाल फैलता जायेगा वैसे-वैसे संगणक अपराध आज भी बड़े पैमाने पर होते हैं मगर उनमें से सिर्फ 10 प्रतिशत ही सामने आ पाते हैं। वजह यह है कि अक्सर या तो वे पकड़े ही नहीं जाते और यदि पकड़े भी जाते हैं तो कंपनियों के प्रबंधक अपने व्यवसायिक स्वार्थो के कारण इन्हें सामने लाने से कतराते हैं। एक जाने माने संगणक विशेषज्ञ हानपार्कर का दावा है। कि संगणक अपराधों से अमेरिकी कंपनियों को हर साल पांच सौ करोड़ रुपये की हानि होती है। संगणक कंपनियों के मालिकों का आरोप है कि पार्कर महोदय तिल को ताड़ बनाकर पेश कर रहे हैं। उनके आरोप में ज्यादा दमखम नहीं है। वैसे संभव है कि प्रलय के अन्य मसीहाओं की तरह पार्कर ने भी आंकड़े बहुत बढ़ा चढ़ा कर पेश किए हों मगर इस हकीकत को कैसे झुठलाया जा सकता है कि संगणक अपराधों में अक्सर बहुत बड़ी रकम की हेराफेरी होती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार औसत संगणक घपला 5 लाख डालर का होता है जबकि परम्परागत ढंग से होने वाले घोटाले में औसतन 2500 डालर की हेरा फेरी होती है।

संगणक गोटालों की खूबी यह है कि इनमें अपराधी संगणकों की प्रविधिकी को ही उसके खिलाफ इस्तेमाल करता है। ज्यदातार अपराधी संगणक केन्द्रों के कर्मचारी ही होते हैं। पले वे संगणकों के कामकाज की बारीक से बारीक जानकारी हासिल करते हैं फिर उस जानकारी का इस्तेमाल कर संगणकों को ठप्प कर देते हैं। संगणकों की अपनी कार्यविधि ङी बहुत हद तक संगणक अपराधों के लिए जिम्मेदार है। इसमें तथ्य या आंकड़े बाउचर या कागजों पर नहीं चुंबकीय टेपों पर अंकित रहते हैं। इसलिए अपराधी को कागजों में घोटाले या जालसाजी करने की जरूरत नहीं पड़ती। संगणकों का सारा काम उसे दिए गए आँकड़ों और कार्यक्रम के मुताबिक होता है। इनमें हेरफेर करके अपराधी मनचाहा लाभ उठाकर भी बेकसूर बना रह सकता है। जब से बैंको में वैद्दुतकी धन हस्तांतरण की व्यवस्था हुई है संगणक अपरध भी तेजी से बढ़ते जा जा रहे हैं। यूँ तो यह बड़ी आरामदायक व्यवस्था है। इसमें वैद्दुतकी संकेतों के जरिये पलक झपकते बड़ी से बड़ी रकम हस्तांतरित हो जाती है। पहले धन के हस्तांतरण के लिए हस्ताक्षर लिए जाते थे। वैद्दुतकी व्यवस्था में सिर्फ आंकड़ों और संकेतों से काम चल जाता है जिन्हें धन हस्तांतरण करने वाला अफसर ही जानता है।

अभ्यास-20

कर्नाटक और तमिलनाडु की सरकारें आपस में ऐस टकरा रही हैं जैसे वे दोनों एक ही देश की दो राज्य सरकारें नहीं बल्कि दो देशों की आजाद सरकारें हों उनके तेवर दो स्वतन्त्र और सम्प्रभू सरकारों के तेवरों से मिलते जुलते हैं। पानी के सवाल पर जिस तरह इन सरकारों का रक्तचाप बढ़ रहा है उससे एक बात तो साफ है कि उनकी आंख का पानी मर चुका है। उनका आचरण सद्भावनापूर्ण पड़ोसी राज्य सरकारों के समान न होकर संकुचित और संकीर्ण लड़ाकु पड़ोसियों की शैली लिए हुए है कावेरी जल विवाद का फैसला करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा-नियुक्त न्यायिक आयोग की अन्तरिम संस्तुति को नहीं मानने और जबरदस्ती मनवाने की परस्पर विरोधी जिदें लेकर प्रदेशव्यापी बंद और अध्यादेश जारी करने जैसी कार्यवाही से जो खुली लड़ाई शुरू हो गई है उसकी आग अन्य राज्यों में भी फैल सकती है। हमारे देश की अधिकांश नदियाँ कई राज्यों से होकर प्रवाहित होती हैं। नदियों की इस अन्तर्राज्यीय व्यापकता ने हमारे देश को एक असें से जोड़े रखने का काम किया है। हमारी सभ्यता का विकास इन्हीं नदियों के तट पर हुआ। नगरीय जीवन प्रणाली भी नदियों के तट पर ही विकसित हुई है। जो नदियां एक समय देश को जोड़ने का काम करती थीं वहीं आज संबंधों को तोड़ने का कारण बनें यह कोई जिम्मेदार देशवासी कैसे सहन कर सकता है। पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के बीच सतलज और व्यास के जल का विवाद, गुजरात और मध्य-प्रदेश के बीच नर्मदा जल विवाद तथा कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच कावेरी जल विवाद एक के बाद एक जुड़ती वे कड़ियाँ हैं जो धीरे-धीरे अन्तर्राज्यीय विवाद की सीमायें लांघ कर राष्ट्रीय विवाद का रूप ले सकती हैं। भारत सरकार ने इस समस्या का हल निकलने के लिए केन्द्रीय जल आयोग का गठन किया था। जैसे-जैसे कृषि, उद्दोग एवं बढ़ती आबादी के कारण पीने के लिए पानी की आवश्कता बढ़ती जा रही है, प्रत्येक राज्य का स्थानीय प्रशासन जल आपूर्ति के माध्यमों का दोहन बढ़ाता जा रहा है। स्वाभाविक रूप से जलापूर्ति वहाँ अधिक होगी। जहाँ से उसका उद्गम है, यदि गंगा और यमुना के जल का उत्तर प्रदेश अपनी पूरी आवश्यकता के अनुरूप उपयोग करना शुरू कर दे तो उसका असर न केवल बिहार और बंगाल, हरियाणा अपितु बांगलादेश पर भी पड़ने लग सकता है।

भारत बाँगलादेश के बीच फरक्का परियोजना पर उठे विवाद का जो अन्तर्राष्ट्रीय निपटारा हुआ है उसमें गंगा के उद्गम से उसके सागर में मिलने तक कितने क्यूसेक जल किस राज्य में नहरों आदि के माध्यम से निकाला जा सकेगा इसका एक व्यापक समझौता हुआ है जिसके कारण अनेक योजनाओं को पुनरीक्षित करना पड़ा है। कावेरी का कितना जल किस राज्य को मिले इसका फैसला करने के लिए केन्द्रीय सरकार ने जिस आयोग का गठन किया है उसने अंतिम निर्णय के पूर्व एक अन्तरिम निर्णय दे दिया है तमिलनाडु सरकार का दबाव है कि केन्द्रीय सरकार इस फैसले पर अमल सुनिश्चित कराये। कर्नाटक सरकार चाहती है कि अन्तरिम फैसला अंतिम फैसले तक पानी में ही पड़ा रहे कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक की सहयोगी सरकार। कहाँ तो हम प्याऊ बैठा कर पानी पिलाया करते थे लोक कल्याकारी अवधारणा पर सरकारों के गठन के बाद प्याऊ तो बंद हो ही गये थे, अब सरकारों ने एक दूसरे राज्यों को जलापूर्ति भी बंद करना शुरू कर दिया है ताकि पड़ोसी राज्य प्यासा मर जाये, उसकी खड़ी फसलें सूख जायें। माननीय प्रधानमंत्री नरसिंहराव को कावेरी जल विवाद की उग्रता को रोकने और अन्तर्राज्यीय नदियों के जल उपयोगी के लिए सम्यक नीति निर्धारित करने की दिशा में तत्काल कदम उठाना चाहिए।

अभ्यास-21

उत्तराखण्ड में वनों की अंधाधुंध कटान से उस क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश के पर्यावरण पर जो प्रभाव पड़ने लगा भा या भविष्य में पड़ सकता था उसे पद्देनजर रखते हुए हमारी लोकप्रिय सरकार ने एक वब नीति बनाई। इस नीति के अन्तर्गत वृक्ष लगाना सुनिश्चित किया गया था परन्तु उत्तराखण्ड से जो समाचार मिल रहे हैं उन समाचारों से ऐसा आभास मिल रहा है कि सरकार द्वारा बनाई गयी नीति के तहत 1500 मी॰ ऊंचाई वाले क्षेत्रों तक ही चीड़ के वृक्ष लगाना निश्चय किया गया था मगर अब इससे भी ऊंचे स्थानों जैसे नन्दासैण में सरकार ने चीड़ के पौधे लगाये हैं। जिसके कारण पहाड़ों पर जलने वाला चिपको आन्दोलन नया मोड़ ले रहा है चिपको आन्दोलन पेड़ों की रक्षा के लिए शुरू किया गया था और यह बात सर्वविदित है कि इस आन्दोलन ने सारे देश का ध्यान पेड़ों की सुरक्षा की ओर खींचा था तथा अब यह आन्दोलन इस बात की ओर देश का ध्यान खींच रहा है कि पेड़ों को लगाने में अक्ल की भी जरूरत होती है। चमोली के नन्दासैण क्षेत्र में सरकारी वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत चीड़ के पौधे लगाने का भारी विरोध हो रहा है यह विरोध इसलिए हो रहा है कि आन्दोलन से जुड़े लोगों का मानना है कि इससे लाभ नहीं हानि ही होगी। इस आन्दोलन में कार्यकर्ता जाहते हैं कि ये पौधे 1500 मी॰ से कम ऊंचे क्षेत्र में लगाये जाये अन्यथा वे स्वयं इन पौधें को उखाड़ कर निचले क्षेत्रों में रोपित करने के लिए सत्याग्रह करेंगे। कैसी विडम्बना है कि जो आन्दोलन वृक्षारोपण और पेड़ों की सुरक्षा को तरफदार रहा है वही आन्दोलन आज सरकारी वन नीति के चलते रोपे हुए पौधें को उखाड़ने के मोड़ पर आ गया है। उनका उद्देश्य पावन हैं तथा यह बता रहा है कि आम की जगह बबूल बोने से काँटे की चुभेंगे। सरकार को तुरन्त इस ओर ध्यान देना चाहिए अन्यथा “पृथक उत्तराखण्ड” की माँग, चीड़ की आग को हवा देने लगेगी।

अभ्यास-22

प्रदेश के आर्थिक विकास में सिंचाई सुविधाएं सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं प्रदेश की आय का सबसे बड़ा हिस्सा कृषि उपज से प्राप्त होता है और कृषि उत्पादन में वृद्धि सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से ही संभव हुई है। यह सिंचाई सुविधाओं का ही चमत्कार है कि हमारा खद्दन्न उत्पादन, जो पहली योजना के दौरान वर्ष 155-56 में केवल 120.56 लाख मी॰ टन था, वह छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष 1984-85 में 304.65 लाख मी॰ टन तक पहुंच गया। यह वृद्धि 153 प्रतिशत है। 20-सूत्रीय कार्यक्रम में सर्वाधिक महत्व इसी कार्यक्रम को दिया गया है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री ने शासन की बागडोर संभालते ही जिन कार्यो को सर्वप्रथम अपना दायित्व समझते हुए सर्वोच्च प्राथमिकता दी उनमें सिचाई सुविधाओं का विस्तार प्रमुख हैं। प्रदेश में सिंचाई के प्रचुर प्राकृतिक स्त्रोत उपलब्ध हैं और इनका सदुपयोग करने के लिए अनेक सतही जल परियोजनाएं और भूजल परियोजनाएं चल रही हैं।

मा० मुख्यमन्त्री ने इन सभी परियोजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूरा करने पर बल दिया है। सिंचाई विभाग के अभियन्ताओं को आदेश जारी किये गये हैं कि वे टूटी हुई नालियों की मरम्मत का कार्य युद्ध स्तर पर करें और नहरों की सफाई का कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूरा करें ताकि किसानों को इसका पूरा-पूरा लाभ मिल सके।

छठी योजना के अंत तक राजकीय साधनों से प्रदेश की सिंचन क्षमता 102.13 लाख हेक्टर थी और उसे सातवीं योजना के अंत तक 116.94 लाख हेक्टेयर करने की चेष्टा की चा रही है। सप्तम पंचवर्षीय योजना मे वृहद तथा मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के लिए 1.380 करोड़ रुपये का परिव्यय प्रस्तावित है जिससे 6.77 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त सिंचन क्षमता का सृजन होगा। बहुउद्देशीय, वृहद तथा मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के अंतर्गत वर्ष 1985-86 में 58,000 हेक्टयर क्षमता का सृजन का अनुमान है तथा वर्ष 186-87 में 58,000 हेक्टेयर क्षमता का सृजन प्रस्तावित है। वर्ष 1986-87 में सिंचाई योजनाओं तथा बाढ़ नियंत्रण कार्यो के लिए 389.72 करोड़ रु॰ का परिव्यय निर्धारित किया गया है। इससे बड़ी तथा मध्यम परियोजनाओं द्वारा 1989-87 में 58 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में अतिरिक्त सिंचन क्षमता सृजित की जायेगी।

अभ्यास-23

आशुलिपि तथा टंकण

जीव-जन्तुओं की रक्षा मनुष्य जाति के लिए अनिवार्य

गत 400 वर्षो से मनुष्य पशुओं के वंशनाश की प्रक्रिया को अनजाने में ही खतरनाक गति से बढ़ाता आ रहा है। अनुमान है कि प्रतिवर्ष जीव-जन्तुओं के लगभग 150 वंशो का नाश होता है। सरकारी सूत्रों के अनुसार 500 से 700 स्तनपायी पक्षी, मछलियाँ, सरीसृप तथा जल-थलचर लुप्त प्रायः हो चुके हैं बाघ, जंगली चूहे, पांडा तथा ह्वेल भी पूर्ण लोप की ओर बढ़ रहे हैं। विशालकाय कछुए, जिनके पूर्वज 25 करोड़ वर्ष पूर्व जन्में थे अब संख्या में मात्र 18 रह गये हैं ध्रुवीय भालुओं की संख्या भी घटकर 10,000 से भी कम रह गई हैं।

सयुक्त राच्य अमेरिका के राष्ट्रीय प्रतीक चील के केवल 235 जोड़े ही बचे हुए हैं। 200 वर्ष पहले गंजी चीलों के लगभग 50,000 जोड़े आकाश में बिहार करते थे पर पिछले दशक के अन्त में उनकी संख्या घटकर 400 से भी कम रह गई। उनकी संख्या में ह्रास का मुख्य कारण कीटनाशक डी.डी.टी. था, जीस पर अब अमेरिका में पाबन्दी लगा दी गई है।

बहुत कम लागों को यह जानकारी ह कि जीव-जन्तुओं के अस्तित्व पर मनुष्य जाति का अस्तित्व निर्भर है क्योंकि दोनों ही प्रकृति-चक्र के अंग हैं। संसार की अधिकतर आबादी पशुओं, पक्षियों व जलचरों से भोजन प्राप्त करती है। इसके अलावा जीव-जन्तु और कृमि प्रकृति के चक्र को चालू रखते हैं। उनमें से किसी एक का लोप हो जाने से प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है जिससे मनुष्य जाति भी प्रभावित होती है अतः उनका संरक्षण बहुत जरूरी है।

मनुष्य को जीव-जन्तुओं के संरक्षण की आवश्यकता का अनुभव हाल में ही हुआ है अतः इस दिशा में तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं। न केवल उनके शिकार पर पाबन्दी लगा दी गई है अपितु उनके लिए अभयारण्यों की स्थापना की जा रही है। उनकी वृद्धि के लिए विशेष प्रजनन केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं जहाँ जीवशास्तत्री वैज्ञानिक विधियों से उनका प्रजनन व पालन-पोषण कर रहे हैं।

16वीं शताब्दी से लेकर आज तक स्तनपायी जीवों की 125 और पक्षियों की 235 जातियाँ नष्ट हो चुकी हैं। भारत में एक भी चीता नहीं रहा है और अफ्रीका में चीते वंशनाश की ओर प्रवृत्त है। चीतों, बाघों,तेंदुओं तथा सिंहों को भोजन के लिए नहीं वरन् उनकी बहुमूल्य खालों को प्राप्त करने के लिए मारा जाता है। इसी प्रकार हाथियों को हाथीदांत के लिए, मगरमच्छों को खाल के लिए, बालों वाले जीवोंको फर प्राप्त तरने के लिए और कस्तूरी-मृगों को कस्तूरी प्राप्त करने के लिए आँखें मूंद कर मारा जाता है। कीटनाशक दवाएं तथा जल प्रदूषण भी जीव-जन्तुओं के विनाश में योग देते हैं। भारतीय गेंडों की संख्या अब 20 से भी कम रह गई हैं। उनको सींग प्राप्त करने के लिए मारा जाता है।

करोड़ों वर्षो से समुद्री कछुए ज्वार के साथ तट पर आकर अपने अण्डे गड्ढे खोदकर उनमें जमा करते आ रहे हैं। वे एक बार में लगभग 100 (सौ) अण्डे देते हैं। दो महीने बाद अण्डे फूटने पर बच्चे बाहर आ जाते हैं और समुद्र में चले जाते हैं परन्तु उनके कोमल मांस, खाल, तेल तथा ढाँचे के लोभी उन्हें मार डालते हैं। फलताः उनकी संख्या अब बहुत कम रह गयी है। अब उनकी रक्षा तथा संख्या वृद्धि के लिए अभयारण्य बनाये जा रहे हैं। इसी तरह मगरमच्छों तथा घड़ियालों के संरक्षण के लिए जगह-जगह वैज्ञानिक प्रजनन केन्द्र स्थापित किये गए हैं।

अभ्यास-24

भारत सदैव अपनी गरिमा अलग ही बनाता रहा है। प्रचीन समय में शिक्षा माध्यम, गुरुकुलों का पोषण एवं रक्षा, राजाओं तथा महाराजाओं द्वारा की जाती थी गुरुकुलों का संचालन तथा विद्दादान विद्वान गुरुओं द्वारा किया जाता था। उन गुरुओं का, राजा तथा रंक, यहाँ तक कि समाज का प्रत्येक प्राणी सम्मान करता था और आदर देता था। प्रत्येक वर्ष ‘गुरुपर्व’ के दिन इन गुरुओं की पूजा अर्चना आदि, शिष्यों द्वारा तो की जाती ही थी साथ ही उन शिष्योंके स्वजनों द्वारा भी बड़ा स्नेह और मान दिया जाता था।

यह परम्परा समय के अनुसार बदलती गई। गुरुपर्व का दूसरा रूप शिक्षक दिवस ने ले लिया। गुरुकुलों का स्थान विद्दालयों ने अपनाया। शिक्षा की पद्धति में भी परिवर्तन होता चला गया। परिवर्तन होना आवश्यक था, कारण, देश-विदेश से सम्पर्क स्थापित करने से ही भारत की उन्नति में निखार आ सकता था।

कर्तव्य परायण शिक्षकों ने भारत के भावी नागरिकों के निर्माण में बड़ा सहयोग दियाष मुझे कहने में संकोच नहीं है आधुनिक दैनिक समस्याओं के कारण हमारे भारत के शिक्षकों के सामने ऐसे-ऐसे कठिन तथा असहाय मार्ग आते हैं जिनको तय करने में उनका साहस खो देना असम्भव नहीं होता। प्राचीन समय में गुरुओं की रक्षा का भार उन प्रान्तों अथवा श्रीमन्तों के कन्धों पर था परन्तु आज उस प्रकार की रक्षा मिलने में रूकावटें आ गयी हैं। यही कारण है कि कहीं-कहीं शिक्षा का स्तर निम्न कोटि का होता जा रहा है। शिक्षकों को हमारे अभिभावक, धन से खरीदा हुआ समझते हैं।

अभ्यास-25

हम विश्व के विषय में अपनी समान विचारधारा, के कारण ही यहाँ उपस्थित हुए हैं। हालाँकि हम सौ से भी अधिक देशों से आए हैं किन्तु हम सब एक मानव परिवार के ही सदस्य हैं। हम चाहते हैं कि हमारे परिवार का जीवन स्तर अच्छा हो। हम नहीं चाहते कि हममें से आधे समृद्ध हों और आधे वंचित हों तथा मेरी यह इच्छा है कि सभी देशों तक विकास, समृद्धि और ज्ञान का प्रकाश पहुंचे। हम भय में नहीं बल्कि स्वतंत्रता के वातावरण में रहना चाहते हैं यहाँ युद्ध की काली छाया न मंडराए, सर्वत्र शान्ति व्याप्त हो।

वास्तव में यही गुटनिरपेक्षता एक विचारधारा, एक वास्तविकता, एक आन्दोलन है, जिसमें इतिहास का स्वरूप बदलने की शक्ति निहित है। अपने इस आन्दोलन के 25 वर्ष पूरे कर लेने के उपलक्ष्य में हम यहाँ एकत्र हुए हैं। इस अवसर पर हम सहअस्तित्व, शान्तिपूर्ष वातावरण में सह-विकास सम्मान एवं समानता के आदर्शो को साकार रूप देने का संकल्प करते हैं।

मै, हार्दिक स्वागत और स्नेहपूर्ण आतिथ्य के लिए जिम्वाब्बे के प्रधानमंत्री और निवासियों को धन्यवाद देता हूं। अब हमारे इस आंदोलन के अध्यक्ष प्रधानमंत्री श्री मुगावे होंगे जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए शौर्यपूर्ण संघर्ष द्वारा अपने देश का नेतृत्व किया। राबर्ट मुगाबे और जिम्बाव्वे साहस और दृढ़संकल्प की उस भावना का प्रतिबिम्ब है जो अफ्रीका और गुटनिरपेक्ष समुदाय में एक नई जान फूंक रही है।

हमारा आन्दोलन विदेशी शासन साम्राज्य और उपनिवेशवाद के विरूद्ध संघर्ष की देन है। इसका उद्देश्य स्वतंत्रता और समानता की हमारी दृष्टि को नया रूप, आकार एवं आयाम देना है। इस सपने को साकार करने के लिए अनेक व्यक्तियों ने खून पसीना एक किया तथा असीम पीड़ा एवं दुख झेलें। ये वे नेता थे जिन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलाई।